Delhi Postal Regd. No. DL (C) - 01/1272/2021-23 R.N.I. No. 72014/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

अर्हत उवाच

तितिक्खं परमं णच्चा।
तितिक्षा मोक्ष का परम साधन है।

❖❖❖

परिग्गहे णिविट्ठाणं,
वेरं तेसिं पवड्ढई।
जो परिग्रह के अर्जन, संरक्षण और भोग में रत हैं, उनका वैर बढ़ता है।

• नई दिल्ली • वर्ष 24 • अंक 34 • 29 मई - 4 जून, 2023 प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 27-05-2023 • पेज : 16 • ₹ 10

जिसका मन धर्म में रमा रहे उसे देवता भी करते हैं नमस्कार : आचार्यश्री महाश्रमण

धर्मपुर, वलसाड १७ मई, २०२२

तेरापंथ के एकादशम् अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी अपनी धवल सेना के साथ अणुव्रत यात्रा के अंतर्गत प्रातः धर्मपुर स्थित श्रीमद्‌राजचंद्र मिशन में विशाल भव्य जुलूस के साथ पधारे। राकेश भाई ने पूज्यप्रवर की अगवानी की। श्रीमद् राजचंद्र मिशन में अनेक साधक-साधिकाएँ साधनारत हैं।

परम पावन ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि जैन आगम के दसवेंआलियं के प्रथम अध्ययन के प्रथम श्लोक में धर्म की व्याख्या की गई है। ऐसा लगता है कि एक श्लोक में ही धर्म का सार भर दिया गया है।

हमारी दुनिया में मंगल की कामना की जाती है। आदमी स्वयं व दूसरों के प्रति मंगलकामना अभिव्यक्त करता है। शुभ कार्य के लिए शुभ मुहूर्त देखना व पदार्थ-गुड़ चंवलेड़ी आदि मंगल के संदर्भ में प्रयास है, पर ये छोटे प्रयास हैं। शास्त्रकार ने उत्कृष्ट बात बताई है कि सबसे बड़ा मंगल है–धर्म। अहिंसा, संयम और तप धर्म है। जिसका मन इस धर्म में हमेशा रमा रहता है, उसे देव भी नमस्कार करते हैं।

दुनिया में देव पूजा होती है। पर देव चौथे गुणस्थान से आगे नहीं बढ़ सकते। देवों के लिए साधु पूजनीय होते हैं, पर साधु के लिए देव पूजनीय नहीं होते। अध्यात्म साधना की ऊँचाई जो साधु में आ सकती है, साधना करते-करते केवलज्ञान प्राप्त कर सकता है, पर देवता केवलज्ञान प्राप्त नहीं कर सकते।

अहिंसा-दया बहुत बड़ा धर्म है। हमारे आद्य प्रवर्तक आचार्यश्री भिक्षु ने कहा है कि हम सब जीवों को अभयदान दें। अभयदान सबसे बड़ा दान है। आत्मा में ही हिंसा और अहिंसा के भाव होते हैं। जो अप्रमत्त है वह अहिंसक है। सब जीवों को आत्म तुल्य समझें।

सम्यक्त्व के बिना चारित्र भावों में नहीं आ सकता है। दृष्टिकोण हमारा सही रहे। इंद्रियों व मन, वचन का संयम हो। तपस्या के बारह प्रकार हैं। इनकी जितनी साधना करें, हम मोक्ष की दिशा में आगे बढ़ सकते हैं। अणुव्रत-प्रेक्षाध्यान आदि अध्यात्म की साधना है।

आज यहाँ राकेश भाई से मिलना हुआ है। यहाँ विशेष रूप से आए हैं। जहाँ साधना अध्यात्म की आराधना चले वह खास बात है। स्थान की अनुकूलता तो निमित्त बन सकती है। राकेश भाई अध्यात्म के प्रचार-प्रसार व उन्नयन में अपनी शक्ति का नियोजन करते हैं। श्रीमद्‌राजचंद्र शुद्ध साधक थे। अध्यात्म व यथार्थता जहाँ मिले, ले लेनी चाहिए।

श्रीमद् राजचंद्र मिशन के गुरुदेव श्री राकेशजी ने अपने संबोधन में कहा कि आज हम सबका अहोभाग्य है कि आज हमारे यहाँ गर्मी में बसंत ऋतु का आगमन हुआ है। आचार्यश्री महाश्रमण जी में ज्ञान की प्रगाढ़ता और वैराग्य भावना उत्कृष्ट है। अनेकानेक गुण संपन्न आचार्यश्री हैं। आपकी गुरु भक्ति और अंतर्मुखता बेजोड़ है। महान ब्रह्मचारी जैन धर्म की प्रभावना कर रहे हैं। आपका पुण्य वैभव और प्रज्ञा वैभव प्रकट है। उत्कृष्ट वक्ता और पवित्रता वैभव है। संसार में रहते हुए संसार से मुक्त हैं। विद्वान होते हुए विनम्र एवं वात्सल्य मूर्ति हैं।

सत्पुरुष हिल स्टेशन के समान होते हैं, जिनके पास आते ही शीतलता का अनुभव होता है। सत्पुरुष की वाणी सुनने से समदृष्टि प्राप्त होती है। श्रीमद्‌राजचंद्र जी की वाणी है कि दृश्य को अदृश्य और अदृश्य को दृश्य दिया ऐसे अनंत वीर्यधारक की वाणी अंतर्मुखता को आमंत्रण देने वाली होती है। मोह का जोर सब जगह चलता है, पर ज्ञानी पुरुष के सामने मोह का जोर नहीं चलता है। ज्ञानी ने क्या किया व साधक को क्या करना है, यह महत्त्वपूर्ण है।

(शेष पृष्ठ २ पर)

आचार्य श्री तुलसी 27वां महाप्रयाण दिवस

आषाढ़ कृष्णा- 3 (6 जून 2023)

श्रद्धाप्रणत:-
अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स परिवार

सत्य की खोज के लिए अनाग्रह का भाव जरूरी : आचार्यश्री महाश्रमण

वापी, २२ मई, २०२३

वापी में प्रवास के दूसरे दिन शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमण जी ने अमृत वर्षा करते हुए फरमाया कि हमारी दुनिया में ज्ञान का बहुत महत्त्व है। ज्ञान दो प्रकार का होता है। एक बाहर से लिया जाने वाला ज्ञान और दूसरा भीतर से उठने वाला ज्ञान। जिसे आत्म-समुत्थ या अतीन्द्रिय ज्ञान भी कहा जा सकता है। यह ज्ञान विशेष होता है। इस ज्ञान के माध्यम से व्यक्ति को सत्य की खोज करनी चाहिए।

एक कुंड का पानी होता है और एक कुएँ का। कुंड में तो बाहर से जितना पानी डाला जाएगा उतना पानी हम वापस निकालकर काम में ले सकते हैं। जबकि कुएँ का पानी भीतर के स्रोत से आने वाला पानी होता है। इसी प्रकार हम कुछ ज्ञान इंद्रियों के माध्यम से ग्रहण करते हैं। विद्यालयों में पढ़ना या किसी के द्वारा ज्ञान ग्रहण कराया जाना ज्ञान कुंड के पानी की तरह हो सकता है।

केवलज्ञान, मन:पर्यव ज्ञान, अवधिज्ञान ये अतीन्द्रिय ज्ञान हैं कुछ ज्ञान जिनकी भीतर से स्फुरणा होती है, प्रज्ञा जागरण या मति-श्रुत का विशिष्ट ज्ञान भी हो सकता है। आदमी अपने चिंतन-मनन से तत्त्व का निचोड़ निकाल सकता है, ये सब आत्म-समुत्थ या उसके आसपास का ज्ञान हो सकता है।

शास्त्रकार ने कहा है कि आत्मना स्वयं सत्य की खोज करो। स्वयं साक्षात्कार करें। सत्य की खोज के लिए अनाग्रह भाव होना जरूरी है और साथ में सत्यान्वेषण का प्रयास भी हो। कूपमंडुक न बनें। प्राणियों के प्रति मैत्री करें। प्रेक्षाध्यान में भी यही प्रयोग कराया जाता है। दूसरों के अहित में ज्ञान का प्रयोग न हो।

(शेष पृष्ठ २ पर)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
29 मई - 4 जून, 2023

✦ *समय धन है। उसका सदुपयोग करो। व्यर्थ कार्यों में उसे व्यर्थ मत करो।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

जीवन में सदा अच्छे कर्म करें : आचार्यश्री महाश्रमण

वापी, २१ मई, २०२३

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी प्रातः अपनी धवल सेना के साथ लगभग १२ किलोमीटर का विहार कर वापी शहर में पधारे। वापी श्रद्धा का अच्छा क्षेत्र है। यहाँ परम पावन ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारी दुनिया में अनेक धर्म-संप्रदाय हैं। दार्शनिक जगत में अनेक दर्शन हैं और सबके अपने-अपने मंतव्य हैं, सिद्धांत हैं। अनेक दर्शनों व धर्मों में समानता भी देखने को मिल सकती है।

जैन दर्शन के अनेक वाद-सिद्धांत हैं, उनमें एक है—कर्मवाद। आत्मवाद भी महत्त्वपूर्ण सिद्धांत है कि आत्मा शाश्वत है, आत्मा का कभी विनाश नहीं होता, शरीर नष्ट हो जाता है। अनंत जन्मों पहले भी हमारी आत्मा थी, आज भी है और अनंत-अनंत काल बीत जाए तो भी आत्मा आत्मा ही रहेगी। यह आत्मा का स्थायित्व है। आत्मा अजर-अमर है।

जैन दर्शन में नित्यानित्य का सिद्धांत सम्मत है कि हर पदार्थ अपने आपमें नित्य भी है और अनित्य भी है। आत्मा एक द्रव्य है, इसलिए वह स्थायी है। धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय आदि पाँच अस्तिकाय हैं, इनके मूल द्रव्य ध्रुव-शाश्वत है। परंतु पर्याय परिवर्तन हो सकता है।

कर्मवाद में जैसा कर्म प्राणी करता है, उसके अनुसार उसे फल भी भोगना पड़ता है। आठ कर्म बताए गए हैं, इनके आधार पर हम आदमी के व्यक्तित्व का विश्लेषण कर सकते हैं। गृहस्थों के जीवन में ऐसे पाप आचरण न हों ताकि गाढ़ कर्म का बंध न हो। अच्छा जीवन जीएँ। हम जीवन में असद् आचरण करने का प्रयास न करें। अच्छे आचरण करें ताकि पाप कर्म से बचें।

आज वापी आए हैं। वापी की जनता में खूब धार्मिक चेतना जागृत रहे। आध्यात्मिक साधना की बगिया लहलहाती रहे।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने भी उपस्थित जनसमुदाय को संबोधित किया।

पूज्यप्रवर के स्वागत में स्थानीय सभाध्यक्ष महेंद्र मेहता, पूज्यप्रवर की संसारपक्षीय बहन रतनीबाई एवं भाई श्रीचंद दुगड़ तथा स्थानीय नगरपालिकाध्यक्ष कश्मीरा शाह ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। तेरापंथ समाज एवं दुगड़ परिवार द्वारा गीत प्रस्तुत किया गया। ज्ञानशाला द्वारा जैन जीवन शैली पर सुंदर प्रस्तुति हुई। पूज्यप्रवर ने ज्ञानशाला को आशीर्वचन एवं प्रेरणाएँ दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

धर्म का मूल है समता की साधना : आचार्यश्री महाश्रमण

अम्भेटी, वलसाड २० मई, २०२३

जन-जन के उद्धारक आचार्यश्री महाश्रमण जी ने शनिवार को अम्भेटी में मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि अध्यात्म की साधना में और व्यवहार में भी कुछ अंशों में समता की साधना का अत्यंत महत्त्व है।

मोक्ष का मार्ग ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप है। चारित्र की जो साधना है, वह समता की साधना है। समभाव चारित्र है। वीतरागता भी समता ही तो है। पाँच महाव्रत भी समता से ही जुड़े हैं। समता के मूल को सींचन मिलता रहेगा तो ऊपर का सब ठीक रहेगा। ऊपरी सींचन से मूल सूख सकता है, यह एक प्रसंग से समझाया।

समता की साधना धर्म का मूल है। समता की साधना से ही अन्य व्रतों की साधना हो सकती है। लाभ हो या अलाभ, सुख या दुःख, जीवन या मरण, निंदा या प्रशंसा सबमें समता रखो। समता धर्म को समझ कर इसे समझने का प्रयास करें। बड़ों का बड़प्पन इसी में है कि वह समता रखें। छोटा हो या बड़ा समता धर्म सबके लिए कल्याणकारी हो सकता है। व्यापार हो या व्यवहार सब जगह समता आवश्यक है।

पूज्यप्रवर के स्वागत में स्थानीय सरपंच योगेश भाई, स्कूल के प्रिंसिपल गजेंद्र भाई ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। पूज्यप्रवर ने स्कूल के अध्यापकों को अहिंसा यात्रा के तीन संकल्प स्वीकार करवाए।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

महाश्रमणोस्तु मंगलम कार्यक्रम का आयोजन

औरंगाबाद।

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप द्वारा महाश्रमणोस्तु मंगलम २:० कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस धम्म जागरण में अनेक सम्माननीय गायकों ने अपने सुमधुर गीतों के साथ उपस्थित धर्मसंघ को मंत्रमुग्ध कर दिया।

कार्यक्रम की शुरुआत मंगलाचरण के साथ प्रतिभा सुराणा ने की। तेयुप के अध्यक्ष विवेक बागरेचा, तेरापंथ सभा अध्यक्ष कौशिक सुराणा, आचार्य महाश्रमण अक्षय तृतीया प्रवास व्यवस्था समिति, औरंगाबाद के सदस्य राजा बाबू डोसी ने उपस्थित धर्मसंघ को संबोधित किया। इस कार्यक्रम का संचालन प्रतिभा सुराणा ने किया। मंच संचालन प्रतिभा सुराणा एवं तेयुप की पूरी टीम को साधुवाद एवं आभार व्यक्त किया।

ज्ञान से सत्य की खोज...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

शब्द से जो मान दिया जा सकता है, वो पैसे से नहीं दिया जा सकता। सबके प्रति सद्भावना रखें। निंदा का जवाब अच्छे कार्यों से दें। जिसमें अहिंसा सिद्ध हो जाती है, उसके पास आने वाले लोग वैर-भाव को भूल जाते हैं। अहिंसा-शांति से विकास होगा। अहिंसा परम धर्म है। विरोध को भी विनोद के रूप में लें। सत्य की खोज और सबके प्रति मैत्री रखने से हमारा जीवन उन्नत बन सकता है।

साध्वीवर्या सम्बुद्धयशा जी ने मंगल उद्बोधन देते हुए कहा कि मनुष्य जीवन मूल्यवान है। मशीन को आदमी बनाता है, पर मशीन आदमी को नहीं बना सकती। मनुष्य जीवन को मूल्यवान बनाने के लिए यह शरीर आवश्यक है। यशः शरीर से आदमी युगों-युगों तक याद किया जाता है। धर्म शरीर को भी हम पुष्ट बनाएँ।

पूज्यप्रवर के स्वागत में अणुव्रत समिति से निर्मला झाबक, तेयुप उपाध्यक्ष विजय बोथरा, टीपीएफ अध्यक्ष वीणा बोथरा, महिला मंडल अध्यक्षा करुणा, बाबूलाल सिंघवी, जैन श्वेतांबर संघ से नंदलाल मेहता, राजेश दुगड़, संजय भंडारी, दर्शन भंडारी, मुस्कान बोथरा, प्रेक्षा कच्छारा, नथमल घोघड़ ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। कन्या मंडल व ज्ञानशाला की प्रस्तुति हुई।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

जिसका मन धर्म में रमा रहे...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

जगत स्थिर है, संसार सिर्फ कल्पना है। हमें जो मन दिखाता है, वो हम देखते हैं, पर वास्तविकता को नहीं देखते। जो जागृत है, वो साधु है। अज्ञानी इंद्रिय सुख में संसार में भटकता रहता है। सुपात्र आदमी तो ज्ञानी के एक वचन से जागृत हो जाता है। सफेद बाल और गिरते हुए सूखे पान से हम प्रेरणा लें। मैं अंतर्मुखी बनता रहूँ इसके लिए पुरुषार्थ करता रहूँ, यही कामना है। दोपहर में प्रेक्षाध्यान व जिज्ञासा-समाधान पूज्यप्रवर की सन्निधि में रखा गया। सायं भक्ति का कार्यक्रम हुआ।

मुनि कुमार श्रमण जी ने समझाया कि ऐसा लगता है जैसे दो समुद्रों का मिलन होता है, वैसे दो साधकों का मिलन हुआ है। आज उत्सव का माहौल है। श्रीमद्राजचंद्र एवं राकेश भाई से पुराना संबंध है। आचार्यश्री के भी इस मिशन के प्रति प्रेम के भाव हैं। कार्यक्रम का संचालन मौलिक भाई ने किया।

आर्चाश्री तुलसी के २७वें महाप्रयाण दिवस पर गीत

अर्हम्

● **साध्वी रक्षितयशा** ●

म्हारै प्राणां रा आधार, गुरुदेव तुलसी।
म्हारी नैय्या खेवणहार, गुरुदेव तुलसी।
स्वर्गां स्यूं भेजो आशीर्वर, करां प्रार्थना शासन शेखर।
म्है तो करां इंतजार, गुरुदेव तुलसी।।

चंदेरी रो चांद पियारो, झूमरमल जी रो लाल दुलारो।
चमचम चमक रह्यो दीदार, गुरुदेव तुलसी।।

शैशव वय में संयम पायो, ज्ञान ध्यान रो दियो जलायो।
बणग्या संघ रा सरदार, गुरुदेव तुलसी।

देश-विदेशां अलख जगाई, जन-जन में आस्था विकसाई।
याद आवे है उपकार, गुरुदेव तुलसी।।

नया मोड़ अभियान चलयो, अणु-प्रेक्षा रो बिगुल बजायो।
बांट्या नया-नया उपहार, गुरुदेव तुलसी।।

गण रो गौरव शिखर चढ़ायो, सात समुद्र तक पहुँचायो।
फैली महिमा अपरंपार, गुरुदेव तुलसी।।

तेरापंथ रा भाग्य विधाता, जीणै रो विज्ञान बताता।
पाई पग-पग जय-जयकार, गुरुदेव तुलसी।।

जयवंतो है भैक्षव शासन, महाश्रमण दीपै सिंहासन।
म्हारो नंदनवन गुलजार, गुरुदेव तुलसी।।

लय : स्वामी भीखणजी रो नाम----

रूं रूं मं रमे हो

● **शासनश्री साध्वी सोमलता** ●

रूं रूं में रमे हो तुम, साँसों में बसे हो तुम।
तुलसी गुरु हो मेरे तुलसी गुरु, नित उठ तेरा ध्यान धरूँ।।
तुलसी प्रभु हो मेरे तुलसी प्रभु, पल पल तेरा स्मरण करूँ।। आं।।

निर्विकार आभामंडल, शरणागत के तुम संबल।
महाप्रतापी गुरुवर की, यश लहरें ज्यों सागर की।।१।।

नाम तेरा मंगलमय है, शरण तेरी चैत्यालय है।
कलियुग में तुम थे अर्हम्, कानों में गूँजे सरगम।।२।।

नफरत की दीवारें तोड़, बने विश्व के तुम सिरमौर।
मानव मन को बांधा था, विपरीतों को साधा था।।३।।

नभ में जब तक नीलिमा, वसुंधरा पर हरीतिमा।
तब तक तुमको ध्यायेंगे, उत्सव रोज मनायेंगे।।४।।

अनुशासन के रूप हो, जन-जन के मन भूप हो।
लो सबकी श्रद्धांजलियां, गाये युग विरुदावलियां।।५।।

लय : कली कली खिल रही----

आचार्यश्री तुलसी के महाप्रयाण दिवस पर विशेष

विश्व की महान हस्ती आचार्यश्री तुलसी

❐ मुनि कमल कुमार ❐

आचार्यश्री तुलसी राजस्थान और भारत की ही नहीं बल्कि विश्व की एक महान हस्ती थी। आपकी क्षमताओं को देखकर लेखक, चिंतक, राजनेता, धर्मनेता सभी श्रद्धा से नत मस्तक हो जाते। आप एक संप्रदाय के आचार्य होते हुए भी संप्रदायातीत विचार में विश्वास रखते थे। उनका चिंतन था कि संप्रदाय और धर्म भिन्न-भिन्न हैं। धर्म संप्रदाय से ऊपर है। हम आज यह साक्षात् देख रहे हैं कि सर्वत्र धर्म की जय बोलते हैं, चाहे वह किसी भी संप्रदाय में विश्वास रखता हो। आचार्यश्री तुलसी ने मानवीय गुणों की सुरक्षा के लिए ही अणुव्रत आंदोलन का सूत्रपात किया। उनका यह आंदोलन पानी में तेल बिंदु की तरह पूरे विश्व में विख्यात हो गया। लोगों से यह सुनने को मिला कि यह प्रथम आंदोलन है जो वर्ग, वर्ण, जाति, लिंग से व्यक्ति को महान या हीन नहीं मानता। मानवीय गुणों का विकास या ह्रास ही व्यक्ति को उत्थान और पतन के पथ पर ले जाता है। आचार्यश्री तुलसी ने स्वयं इस आंदोलन के प्रचार-प्रसार के लिए सुदूर प्रांतों की पैदल यात्रा की और अपने सैकड़ों साधु-साध्वियों को देश-विदेश में पैदल यात्राएँ करवाईं। अणुव्रत के विराट विचारों से प्रभावित होकर हिंदू, मुसलमान भी इसके श्रद्धा से अनुयायी बने। देश के गणमान्य लोगों ने इसके प्रचार-प्रसार में अपना भरपूर सहयोग दिया। भारत के प्रथम राष्ट्रपति एवं प्रधानमंत्री भी इस आंदोलन से जुड़े।

मात्र २२ वर्ष की अवस्था में विशाल तेरापंथ धर्मसंघ का संपूर्ण दायित्व आपने कुशलता से संभाला। आपने संघ विकास के लिए कई आयाम दिए जो अपने आपमें अनुपम और अमर हैं। आज जो हम तेरापंथ धर्मसंघ का नवीन रूप देख रहे हैं, यह सब आचार्यश्री तुलसी की दूरदृष्टि का ही परिणाम है। तेमम, तेयुप, कन्या मंडल, तेरापंथ किशोर मंडल, ज्ञानशाला पारमार्थिक शिक्षण संस्था आदि उनकी ही देन है। आज जो हमारे सामने आगम साहित्य, अणुव्रत साहित्य, प्रेक्षाध्यान साहित्य, जीवन-विज्ञान साहित्य इतिहास, बाल साहित्य, हिंदी, संस्कृत, प्राकृत, मारवाड़ी, अंग्रेजी साहित्य जो समयानुसार आ रहा है यह सब आचार्यश्री तुलसी की सतत् प्रेरणा प्रोत्साहन का फल ही मानता हूँ। जो तेरापंथ मारवाड़, मेवाड़, हरियाणा, पंजाब, मालवा, गुजरात आदि समिति प्रांतों में ही था। आज विश्व के कोने-कोने में अपनी पहचान बना पाया है, यह भी गुरुदेव तुलसी के प्रबल पुरुषार्थ का ही सुफल है।

आपके आचार्य बनने से पूर्व साध्वियों का अध्ययन इतना गहरा नहीं था कि कोई साध्वी वक्ता, लेखक, संपादन, साहित्य निर्माण का कार्य कर सके। परंतु आपने युगानुकूल अपने उदात्त विचारों से इस प्रकार श्रम किया कि आज तेरापंथ धर्मसंघ में अनेक साध्वियाँ हर विषय में पारंगत हैं, उनके वक्तव्य साहित्य को देखकर अच्छे-अच्छे लोग भी नतमस्तक हो जाते हैं। गुरुदेव ने केवल साधु-साध्वियों का ही नहीं श्रावक-श्राविकाओं का भी इस प्रकार से निर्माण किया कि आज जहाँ साधु-साध्वियों के चातुर्मास नहीं होते वहाँ उपासक-उपासिकाएँ पहुँचकर अपने वक्तव्य और कार्यों से सबको मंत्रमुग्ध बना देते हैं। आचार्यश्री तुलसी एक ऐसे सिद्ध पुरुष थे जिन पर उनकी दृष्टि टिक जाती वह हर तरह से धन्य हो जाता। आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी और शासनमाता कनकप्रभा जी ही नहीं आचार्यश्री महाश्रमण जी भी उनकी पैनी दृष्टि से प्राप्त हुए हैं। आज जब हम देश-विदेश में पैदल भ्रमण करते हैं और देखते हैं कि लोगों के दिल-दिमाग में आचार्यश्री तुलसी के प्रति जो श्रद्धा, भक्ति थी वैसी ही आज आचार्यश्री महाश्रमण जी के प्रति है, तब हमें आत्म संतोष होता है कि लोग आचार्यश्री तुलसी के शरीर के प्रति नहीं विचारों के प्रति समर्पित हैं। क्योंकि गुरुदेव कई बार फरमाया करते थे कि हम ऊपर जाकर भी देखेंगे कि लोगों की संघ के प्रति और महाश्रमण के प्रति कैसी आस्था है। हमें गौरव होता है कि आचार्यश्री तुलसी की तरह आचार्यश्री महाश्रमण जी भी संघ की सारणा-वारणा और श्रीवृद्धि के लिए जो पुरुषार्थ कर रहे हैं यह प्रशंसनीय ही नहीं सबके लिए अनुकरणीय है। भिक्षु शासन का सौभाग्य है कि समय-समय पर योग्य आचार्यों की प्राप्ति होती रहती है। जिससे यह संघ सदाजीवी, दीर्घजीवी बनता जा रहा है। आचार्यश्री तुलसी के २७वें महाप्रयाण के अवसर पर यह कामना करता हूँ कि आप उत्तरोत्तर विकास करते हुए चरम लक्ष्य को प्राप्त करें और हमें भी सदा सन्मार्ग की प्रेरणा देते रहें। जिससे हम भी स्व-पर कल्याणकारी बन सकें।

'हृदय रोग और संयमित जीवनशैली' कार्यशाला

अहमदाबाद।

तेरापंथी सभा के तत्त्वावधान में 'हृदय रोग और संयमित जीवन शैली' पर एक विशेष कार्यक्रम डॉ० मुनि मदन कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में आयोजित किया गया।

हृदय रोग एवं हमारी जीवन शैली पर विशेष वक्तव्य हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ० धवल अरविंद दोशी (मुनि सिद्धार्थ कुमार जी के संसारपक्षीय भतीजा) का रहा। जिसमें डॉ० ने हृदय क्या और कैसे कार्य करता है, उसकी जानकारी देते हुए हृदय रोग क्या है? उसके लक्षण क्या हैं? हार्ट अटैक क्यों आता है? उसके मुख्य कारण बताए। एक स्वस्थ संयमित जीवन शैली इसे नियंत्रण में रखने में मदद करेगी, हृदय रोग से बचने व स्वस्थ दिल के साथ समग्र शारीरिक स्वास्थ्य और लंबे समय तक स्वस्थ रहने के लिए कुछ टिप्स बताए।

तेरापंथी सभा के साथ तेमम, तेयुप, टीपीएफ, अणुव्रत समिति आदि संस्थाओं द्वारा डॉ० धवल दोशी का सम्मान मोमेंटो, साहित्य, दुपट्टे से किया गया।

मुनि मदन कुमार जी ने कहा कि व्यक्ति संयम की साधना करते हुए भाव क्रिया के साथ जीवन जीता है, योग, ध्यान, धर्म ध्यान साधना का प्रतिदिन अभ्यास करता है, तो हृदय रोग से अवश्य बच सकता है। मुनि सिद्धार्थ कुमार जी ने बताया कि अध्यात्म साधना व संयमित जीवनशैली अपनाने से अनेक बीमारियों से बचा जा सकता है।

इस अवसर पर विभिन्न संस्थाओं के पदाधिकारी, अन्य गणमान्य लोगों के साथ अनेकों श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रही। सभा मंत्री विकास पितलिया ने आवश्यक सूचना के साथ जानकारी दी। डॉ० धवल दोशी ने अनेक लोगों की जिज्ञासाओं का समाधान भी दिया।

✦ *परिवर्तन के आकर्षण में इतना नहीं बहना चाहिए कि व्यक्ति मूल्यपरक संस्कृति से दूर हो जाए।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

आचार्यश्री तुलसी के प्रति उद्गार

अर्हम

● साध्वी सोमप्रभा ●

मंगलकारी नाम तुलसी लागै प्यारो।
जप ले माता वदना रो लाल दुलारो।।

चंदेरी में जन्म लियो हो, गंगाणै में स्वर्ग सिधाया गूँजे जयकारो।
चम्पक लाड़ां रो वीरो तुलसी हार हियारो।।

अणुव्रत प्रेक्षा अलख जगाई, अजब गजब री प्रभु पुण्याई।
सात समंदर पार तेरापंथ गूँजे नारो।।

मस्तक री मणि कियो उजासो, नयणां प्रभु रै शांति रो वासो।
घोर विरोधी आया बै भी लोहो मान्यो थारो।।

पौरुष री जीवंत निशानी, संघर्षों में हार न मानी।
श्रमशीलता बेजोड़, निरख्या नयो निजारो।।

आगम ज्ञाता अनुभवदाता, सफल व्याख्याता युग निर्माता।
सदी बीसवीं रो चमके तुलसी ध्रुव तारो।।

शासन भाषन विश्व विकासन, पाप प्रणाशन धर्म प्रकाशन।
हर पीढ़ी रा पथ दर्शन भव स्यूँ पार उतारो।।

ट्रस्ट बाफना सीन निरालो, जुग-जुग रहसी नाम तिहारो।
नैतिकता रो शक्तिपीठ फैलावै उजियारो।।

पुण्यतिथि म्है आज मनावां, गुरुवर तुलसी रा गुण गावाँ।
महाश्रमण रो शासन दीपै, दृश्य निहारो।।

लय : स्वामी भीखण जी----

कविता

● साध्वी नीतिप्रभा ●

तुलसी तूने गजब मर्दानी दिखलाई।
सुनने को गण कलियाँ उत्साई।।

रूढ़िवाद से घिरा तमस था।
अज्ञानता से भरा मनस था।
फिर कैसे ज्योति विकसाई।
सुनने को गण कलियाँ उत्साई।।

समण श्रेणी सोची तुम्हारी।
पहुँची देश-विदेश फौज तुम्हारी।
कैसे उफनती नदियाँ हरसाई।
सुनने को गण कलियाँ उत्साई।।

वाणी से बरसें जब शोले।
तुमने मधुर वचन थे बोले।
'पुढविं समे मुणी हवेज्जा' सुक्ति मनभाई।
सुनने को गण कलियाँ उत्साई।।

श्रम की बूँदों से सींचा नंदन।
महक इसकी जैसे चंदन।
तेरापंथ पर अमित कृपा बरसाई।
सुनने को गण कलियाँ उत्साई।।

युगों-युगों जन आभारी तेरा।
सौ-सौ वंदन झेलो मेरा।
मैं भी इसकी इक परछाई।
सुनने को गुण कलियाँ उत्साई।।
तुलसी तूने गजब मर्दानी दिखलाई।।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
29 मई - 4 जून, 2023

✦ *तुम्हें कष्ट अप्रिय लगता है तो तुम एक संकल्प करो कि तुम किसी को कष्ट नहीं दोगे व यथासंभव दूसरों के कष्टों का निवारण करने का प्रयास करोगे।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

महिला मंडल के विविध आयोजन

पावर ऑफ अनुशासन कार्यशाला का आयोजन

सिकंदराबाद।

अभातेममं के निर्देशन में तेममं के तत्त्वावधान में 'पावर ऑफ अनुशासन' कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर साध्वी मंगलप्रज्ञा जी ने कहा कि हम सौभाग्यशाली हैं जो वीतराग प्रभु महावीर के शासन में जी रहे हैं। अनुशासन के बिना जीवन कांटों से भरा है। दूसरी महत्त्वपूर्ण बात कही—क्षमा की साधना करें। क्षमा की साधना करने वाला अनुशासन में रहना और अनुशासन करना जानता है।

जीवन विकास का बहुत बड़ा आलंबन होता है—अनुशासन। अनुशासन के साथ-साथ स्वतंत्रता भी दें। समय पर उचित सलाह अवश्य दें पर हस्तक्षेप न करें। तेममं की अध्यक्षा अनिता गिरिया ने स्वागत स्वर प्रस्तुत किए। महिला मंडल की बहनों ने संकल्प गीत प्रस्तुत किया। साध्वीवृंद ने गीत का सामूहिक संगान किया। साध्वी सुदर्शनप्रभा जी ने अपने विचार व्यक्त किए। अमेरिका सैन्यफ्रान्सिसको से समागत निर्मल बैद ने कहा कि गुरुदेव तुलसी ने समण श्रेणी के रूप में सेना को भेजकर विदेश में महावीर वाणी पहुँचाई। इस शृंखला में साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी का सान्निध्य अमेरिका मे प्रवासियों एवं जैन परिवारों को मिला। मुझे पीएचडी करने का सौभाग्य इसके निर्देशन में मिला। महिला मंडल की सहमंत्री शीतल सांखला ने आभार ज्ञापन किया।

द पावर ऑफ डिसिप्लीन कार्यशाला

अमरनगर, जोधपुर।

अभातेममं के निर्देशानुसार तेममं द्वारा साध्वी कुंदनप्रभा जी के सान्निध्य में द पावन ऑफ डिसिप्लीन कार्यशाला का आयोजन किया गया।

नमस्कार मंत्रोच्चार के साथ साध्वीश्री जी ने कार्यशाला का प्रारंभ किया। महिला मंडल की बहनों ने मंगलाचरण किया। अध्यक्षा सरिता कांकरिया ने पधारी हुई सभी बहनों का स्वागत किया एवं अपने भावों की प्रस्तुति दी।

साध्वी चारित्रप्रभा जी ने कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ अनुशासित एवं मर्यादित धर्मसंघ है। साध्वी विद्युतप्रभा जी ने कहा कि किसी भी संस्था को व्यवस्थित चलने के लिए उसका अनुशासित होना जरूरी है। साध्वी कुंदनप्रभा जी ने कहा कि अनुशासन एक सुरक्षा कवच है। साधु-साध्वी अनुशासन में रहते हैं तभी धर्मसंघ सुचारु रूप से चलता है। आभार ज्ञापन मंत्री चंद्रा जीरावला ने किया। कार्यक्रम का संचालन जया जीरावला ने किया।

तत्त्वबोध सेंटर का उद्घाटन

राजराजेश्वरी नगर, बैंगलोर।

अभातेममं के तत्त्वावधान में आचार्यश्री महाश्रमण जी के ५०वें दीक्षा पर्याय के अवसर पर आचार्य तुलसी शिक्षा परियोजना के तहत तेममं, राजराजेश्वरी नगर द्वारा तत्त्वबोध सेंटर का शुभारंभ किया गया।

आरआर नगर के तेरापंथ भवन में प्रथम क्लास की शुरुआत मंडल की बहनों द्वारा मंगलाचरण से की गई। अध्यक्ष लता बाफना ने पधारी हुई सभी बहनों का स्वागत करते हुए कहा कि हम सभी बहनों को तत्त्वों की जानकारी अवश्य होनी चाहिए।

तत्त्वज्ञान स्टडी सेंटर की प्रशिक्षिका कंचन छाजेड़ ने कहा कि हमें तत्त्वज्ञान का बेसिक नॉलेज होना बहुत जरूरी है। प्रशिक्षिका सरोज आर० बैद ने कहा कि हमें तत्त्वों को अच्छे से समझना है, उन्हें केवल रटना नहीं है। कार्यक्रम का संचालन उपाध्यक्ष शोभा बोथरा ने किया। आभार सहमंत्री वंदना भंसाली ने किया।

हैदराबाद।

अभातेममं के निर्देशन में तेममं, हैदराबाद द्वारा 'तत्त्वसंबोध' केंद्र के बैनर का विमोचन कर केंद्र का शुभारंभ किया गया। साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में आरंभ किया गया। इस अवसर पर महिला मंडल द्वारा गीतिका का संगान किया गया। साध्वीश्री जी ने मंगल पाथेय प्रदान किया गया।

महिला मंडल अध्यक्ष अनिता गिडिया, सभा अध्यक्ष बाबूलाल बैद, तेयुप अध्यक्ष वीरेंद्र घोषल, मंत्री नीरज सुराणा, टीपीएफ अध्यक्ष पंकज संचेती, अणुव्रत अध्यक्ष प्रकाश भंडारी ने अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित की। साध्वीवृंद ने गीत का संगान किया।

तत्त्वसंबोध केंद्र योजना को हैदराबाद महिला मंडल ने शुभारंभ कर नई दिशा दी। इस अवसर पर तत्त्वज्ञान प्रशिक्षिकाएँ रंजू बैद, पुष्पा बरड़िया, रेखा संकलेचा, शोभा नाहर, प्रेम पारख, चंद्रा सुराणा आदि अनेक पदाधिकारीगण एवं सदस्य उपस्थित थे।

टी-दासरहल्ली।

आचार्यश्री महाश्रमण जी के ५०वें दीक्षा दिवस के उपलक्ष्य में अभातेममं के निर्देशन में तेममं द्वारा आचार्य तुलसी शिक्षा परियोजना के अंतर्गत तत्त्व संबोध सेंटर का शुभारंभ किया गया। प्रथम तत्त्व संबोध क्लास का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से किया गया। संस्कारक विक्रम बांठिया एवं सह-संस्कारक ने मंगलभावना मंत्र का अर्थ सहित कार्यक्रम आयोजित किया।

महिला मंडल की बहनों द्वारा मंगलाचरण किया गया। अध्यक्ष रेखा मेहेर ने सभी का स्वागत किया।

प्रशिक्षिका के रूप में तत्त्व प्रचेता बहन पूर्णिमा कठोतिया ने नव तत्त्वों के बारे में संक्षिप्त जानकारी दी। मंत्री गीता बाबेल ने कार्यक्रम का संचालन किया।

सभा के पूर्व अध्यक्ष लादूलाल बाबेल, मंत्री प्रवीण बोहरा, तेयुप अध्यक्ष दिलीप पोखरना ने महिला मंडल को बधाई दी।

चेन्नई, साहूकारपेट।

आचार्यश्री महाश्रमण जी के ५०वें वर्ष प्रारंभ पर अभातेममं के निर्देशन में तेममं, चेन्नई के तत्त्वावधान में तत्त्व संबोध प्रकल्प का एक सेंटर साहूकारपेट स्थित तेरापंथ सभा भवन में साध्वी लावण्यश्री जी के सान्निध्य में खुला।

कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के उच्चारण के साथ हुआ। तत्पश्चात प्रेरणा गीत का संगान किया गया। अध्यक्षा पुष्पा हिरण ने स्वागत स्वर प्रस्तुत करते हुए अपने विचारों की अभिव्यक्ति दी। अभातेममं की राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य दीपा पारख ने सेंटर उद्घाटन पर बधाई देते हुए अपने विचार रखे। 'तत्त्व प्रचेता' दीपाली सेठिया ने तत्त्व संबोध पर विस्तृत जानकारी दी। सुबोध सेठिया ने अपने विचार व्यक्त किए।

इस अवसर पर बहनों की सराहनीय उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन सहमंत्री कंचन भंडारी ने किया। सभी का धन्यवाद ज्ञापन अल्का खटेड़ ने किया।

आचार्यश्री तुलसी की २७वीं पुण्यतिथि पर विशेष

अर्हम्

● **साध्वी कुमुदप्रभा** ●

नदना नंदनम्, शत-शत वंदनम्।
कालू कृपापरम, नवम् आसनम्।।

ज्योति अवतार बन अवनि पे आयें।
मैत्री दरिया बहें प्रेम शांति लायें।
मानवता के मसीहा, प्रभु श्रेमंकरम्।।

अणुव्रत का आह्वान विश्व में है छाया।
देश विदेशों ने प्रेक्षा का दर्पण पाया।
समण श्रेणी विशद, प्रभु दूरदर्शनम्।।

महिला शक्ति को प्रगति का मैदान दिया।
महाश्रमणी महाश्रमण पद सृजन किया।
महाप्रज्ञ पट्टधर, प्रभु हृदयेश्वरम्।।

चक्षु तेज ललाम अनुशासन गजब।
वत्सलता के सागर आशीर्वाद अजब।
अर्हम् वाणी सम्राट, श्रुतज्ञानेश्वरम्।।

युगों-युगों गूँजे तेरी विरुदावलि।
चरण कमल में अर्पण है श्रद्धांजलि।
'ॐ तुलसी जय तुलसी' मंत्र, विघ्नशमनम्।।

लय : कौन कहते हैं भगवान आते नहीं----

अर्हम्

● **डॉ० साध्वी परमयशा** ●

युगप्रधान ने युगधारा को दिए गए अवदान।
प्रभु को शीष झुकाएँ, नाव को पार लगाएँ।।

कुंकुम के चरणों से खटेड़ कुल में आए।
राजरूप दादाजी लाड लड़ाए।
झूमर वदनानंदन तुलसी-चंदेरी सम्मान।।

अणुव्रत नैतिकता की अलख जगाएँ।
प्रेक्षा की छाँह तले जीवन सजाएँ।
जीवन का विज्ञान सुनहरा-शिक्षा का अभियान।।

जैन विश्व भारती मुलकों में छाएँ।
समण श्रेणी देश-विदेशों पहचान बनाएँ।
पा०शि० संस्था की फुलवारी-अमल धवल अश्मान।।

आगम संपादन से कीर्तिमान रचाया।
साहित्य शिल्पन से सूरज उगाया।
प्रवचन कौशल-अद्भुत अविचल उतरे पुण्य निधान।।

जब तक नभ में रवि शशि गौरव गाएँ।
ऊर्जा पुरुष का हम सब ध्यान लगाएँ।
पुण्य तिथि की पावन बेला करो प्रभु फरमान।
पुण्यात्मा के चरण कमल में 'परमयशा' संगान।।

लय : स्वर्ग से सुंदर---

जीवन को अध्यात्म की ऊर्जा से ऊर्जा संपन्न बनाएँ

दिल्ली।

साध्वी अणिमाश्री जी का फरीदाबाद, गुड़गाँव एवं दिल्ली उपनगरों का भ्रमण करते हुए पूज्यप्रवर द्वारा निर्दिष्ट क्षेत्र यमुना पार शास्त्री पार्क के जैन स्थानक में मंगल प्रवेश हुआ। यमुनापार के श्रावक-श्राविकाओं ने साध्वीवृंद की श्रद्धा-भक्ति से संभृत भावों से स्वागत किया।

साध्वी अणिमाश्री जी ने कहा कि आज मुझे अत्यधिक आह्लाद की अनुभूति हो रही है कि हम अपने आराध्य आचार्यप्रवर द्वारा निर्दिष्ट चातुर्मासिक क्षेत्र में आ गए हैं। गंतव्य स्थल तक पहुँच गए हैं। आप लोग हमारा स्वागत कर रहे हैं, यह हमारा नहीं ऋषि परंपरा का स्वागत है, भैक्षव शासन का स्वागत है, हमारे अनुशास्ता का स्वागत है, संत चेतना का स्वागत है। संत सभी के लिए वंदनीय होता है। आप लोग संत सन्निधि में आएँ एवं अपने जीवन को ऊर्जामय बनाएँ।

साध्वीवृंद ने प्रेरक गीत द्वारा साध्वीश्री जी के आगमन का उद्देश्य बताया एवं कहा कि हम महाश्रमण मॉल खोलने के लिए आए हैं। महाश्रमण मॉल से माल लेकर अपने जीवन को मालामाल बनाएँ।

शाहदरा सभाध्यक्ष पन्नालाल बैद, गांधीनगर सभाध्यक्ष कमल गांधी, ओसवाल समाज के अध्यक्ष आनंद बुच्चा, गाजियाबाद सभाध्यक्ष सुशील सिपानी, अणुविभा के राष्ट्रीय महामंत्री भीखमचंद सुराणा, उत्तर मध्य दिल्ली सभा के अध्यक्ष प्रसन्न पुगलिया, महिला मंडल मंत्री यश बोथरा ने अपने भाव व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन शाहदरा सभा के मंत्री सुरेश सेठिया ने किया।

प्रभु महावीर के विचार एवं सिद्धांतों को जीवन में अपनाएँ

दलखोला।

मुनि प्रशांत कुमार जी के सान्निध्य में तीर्थ स्थापना दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुनि प्रशांत कुमार जी ने कहा कि अवसर्पिणी काल के अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर ने कैवल्य प्राप्ति के पश्चात चार तीर्थ की स्थापना की। प्रत्येक तीर्थंकर स्वतंत्र रूप से तीर्थ की स्थापना करते हैं। केवलज्ञान प्राप्ति के बाद ही तीर्थंकर देशना देते हैं।

भगवान महावीर ने साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका के लिए व्रत का स्वरूप बताया। संघ के पाँच महाव्रत, पाँच समिति, तीन गुप्ति श्रावक के लिए बारह व्रतों का विधान किया। तीर्थ की स्थापना के बाद वे तीर्थंकर कहलाए।

मुनि कुमुद कुमार जी ने कहा कि जिनशासन के महत्त्वपूर्ण अंग श्रावक होते हैं। साधु-साध्वी के समान श्रावक- श्राविकाओं को भी तीर्थ माना गया। जिनके जीवन में त्याग-संयम होता है वे ही श्रावक की श्रेणी में आते हैं।

कार्यक्रम से पूर्व जैन ध्वजारोहण किया गया। तेरापंथ सभा से पवन दुधेड़िया, तेयुप अध्यक्ष रोहित गधैया, तेमम मंत्री प्रेमलता जैन ज्ञानशाला के ज्ञानार्थी नैतिक चोपड़ा ने विचारों की अभिव्यक्ति दी। सामूहिक रूप से महावीर स्तुति का संगान किया गया।

नि:शुल्क मेडिकल कैंप का आयोजन

जीन्द।

टीपीएफ द्वारा माढा गाँव में एस०बी०एस० स्कूल में नि:शुल्क मेडिकल कैंप का आयोजन किया गया। कैंप में ब्लडप्रेशर चैक, शुगर चैक तथा सामान्य बीमारियों के चैक प्रोफेशनल डॉक्टर द्वारा किए गए। इस दौरान २५० व्यक्तियों ने मैडिकल कैंप में अपना चैकअप करवाया।

सीनियर सर्जरी विशेषज्ञ डॉ० अनिल जैन, बाल रोग विशेषज्ञ डॉ० सुरेश जैन, नेत्र रोग विशेषज्ञ डॉ० कमल गर्ग, सामान्य रोग विशेषज्ञ, डॉ० रविंद्र गोयल, स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ० ममता जैन ने अपना मार्गदर्शन प्रदान किया।

इस अवसर पर जीन्द टीपीएफ के अध्यक्ष सचिन जैन ने सभी डॉ० टीम का स्वागत किया तथा गाँव वालों को आश्वासन दिया कि समय-समय पर जीन्द टीपीएफ द्वारा आगे भी ऐसे ही कैंप आयोजित करवाने का प्रयास रहेगा।

योगक्षेम अभातेयुप योगक्षेम योजना

✳ अभातेयुप प्रबंध मंडल सत्र - 2019-2021	51,00,000
✳ श्री बच्छावत परिवार, सरदारशहर-जयपुर	5,00,000
✳ श्री बसंत अर्पित नाहर, महेंद्रगढ़-उधना	5,00,000
✳ श्री राकेश कठोतिया, लाडनूं-मुंबई	5,00,000
✳ श्री रूपचंद कोडामल जैनसुख दुगड़, बीदासर-मुंबई	5,00,000
✳ श्री शंकरलाल विमल विनीत पितलिया, भीलवाड़ा	5,00,000
✳ श्री शांतिलाल पारसमल दक उमरी, उधना-सूरत	5,00,000
✳ श्री सुमतिचंद गोठी, सरदारशहर-मुंबई	5,00,000
✳ श्री विपिन जैन पारख, सिरसा-मुंबई	5,00,000
✳ श्री राजकुमार गौतम प्रसाद जैन, बेलपाड़ा-उड़ीसा	5,00,000
✳ श्री सागरमल दीपक विमल कमलेश श्रीमाल, देवगढ़-बड़ौदा	5,00,000
✳ श्री जैनसुख दीपक बोथरा, छापर-सिलीगुड़ी	5,00,000
✳ श्री बसंत नवलखा, बीकानेर	5,00,000
✳ श्री बिमल चोपड़ा, गंगाशहर-यमुनानगर	5,00,000
✳ श्रद्धानिष्ठ श्रावक केशरीमल, अनिलकुमार, संजयकुमार, सुनीलकुमार चंडालिया (गंगापुर) सूरत	5,00,000
✳ श्री छत्तरमल गणेशमल विनीतकुमार बैद, राजलदेसर-चेन्नई	5,00,000

संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन जैन विधि - अमूल्य निधि

नूतन गृह प्रवेश

गंगाशहर।

झंवरी देवी बोथरा के पुत्र कमलेश बोथरा का नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक धर्मेन्द्र डाकलिया, पवन छाजेड़, विनीत बोथरा, भरत गोलछा और देवेंद्र डागा ने विधि-विधानपूर्वक मांगलिक मंत्रोच्चार के साथ संपन्न करवाया।

कार्यक्रम में परिवार के सदस्यों की उपस्थिति रही।

गंगाशहर।

सिलीगुड़ी प्रवासी, गंगाशरह निवासी बच्छराज-सुनीता बोथरा के नूतन गृह का प्रवेश जैन संस्कार विधि द्वारा संस्कारक पवन छाजेड़, देवेंद्र डागा ने विधि-विधानपूर्वक मंत्रोच्चार के साथ संपन्न करवाया।

कार्यक्रम में परिवार के सदस्यों की उपस्थिति रही।

उदयपुर।

मनोज-संगीता भंसाली उदयपुर-छापर निवासी के नवीन गृह का प्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक सुबोध दुगड़, मनोज लोढ़ा, पंकज भंडारी ने विधि-विधानपूर्वक करवाया।

तेयुप द्वारा उदयपुर द्वारा मंगलभावना पत्र परिजनों को भेंट किया गया।

गंगाशहर।

संदीप-अमिता देवी सामसुखा के नूतन गृह का प्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक धर्मेन्द्र डाकलिया ओर विपिन बोथरा ने विधि-विधानपूर्वक करवाया।

कार्यक्रम में परिवार के सदस्यों की उपस्थिति रही। मंगलपाठ के साथ कार्यक्रम परिसंपन्न हुआ।

पाणिग्रहण संस्कार

औरंगाबाद।

लोनार निवासी, औरंगाबाद प्रवासी कांतिलाल जोगड़ के सुपुत्र ऋषभ जोगड़ का शुभ पाणिग्रहण संस्कार औरंगाबाद निवासी संजय वायकोस की सुपुत्री पूनम वायकोस के साथ जैन संस्कार विधि से संस्कारक राजेश छाजेड़, अंकुर लुणिया और विवेक बागरेचा ने संपूर्ण विधि-विधान के साथ संपन्न करवाया।

कांतिलाल जोगड़ व संजय बायकोस ने उनके पूरे परिवार ने संस्कारकों व उपस्थिति सभी का आभार ज्ञापन किया। तेयुप की ओर से मंगलभावना पत्रक भेंट किया गया।

नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ

राजाजीनगर।

भावेश मूथा के नूतन प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि द्वारा संस्कारक राणित कोठारी एवं अरविंद दुगड़ ने मंगल मंत्रोच्चार द्वारा करवाया।

परिषद परिवार द्वारा मूथा परिवार को मंगलभावना यंत्र भेंट किया गया। इस अवसर पर तेयुप से संस्थापक अध्यक्ष सुनील बाफना सहित अन्य गणमान्यजन उपस्थित थे।

नामकरण संस्कार

पूर्वांचल-कोलकाता।

सुजानगढ़ निवासी, पूर्वांचल कोलकाता प्रवासी दुलीचंद सिंघी के पुत्र-पुत्रवधू गौरव-नेहा सिंघी के आंगन में पुत्र का जन्म हुआ। जिसका नामकरण जैन संस्कार विधि द्वारा संस्कारक सुरेंद्र सेठिया ने संपूर्ण मंत्रोच्चार से संपादित करवाया।

तेयुप के मंत्री हेमंत बैद ने शुभकामनाएँ प्रेषित कर मंगलभावना यंत्र प्रदान किया साथ ही सिंघी परिवार के प्रति आभार ज्ञापित किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
29 मई - 4 जून, 2023

✦ *तुमने बहुत जाना होगा, पर हेय (त्याज्य) और उपादेय (स्वीकार्य) का विवेक करना नहीं जाना तो तुम्हारे लिए बहुत जानना शेष है।*
—आचार्यश्री महाश्रमण

आचार्यश्री तुलसी के महाप्रयाण दिवस पर विशेष

मानवीय मूल्यों के प्रतिष्ठापक आचार्यश्री तुलसी

❐ मुनि चैतन्य कुमार 'अमन' ❐

भारतीय परंपरा में अनेक ऋषि, महर्षि संत, महंत और आचार्य हुए हैं, जिन्होंने अपने ज्ञान, तपस्या और भक्ति के द्वारा जन-मानस को प्रभावित और प्रकाशित किया है। जीवन के अनेक क्षेत्रों में पदन्यास करते हुए विकास के नित्य नवीन द्वारों को उद्घाटित किया है। जैन, बौद्ध, सिख, सनातन सभी परंपराओं के संतों ने जन-जीवन में अध्यात्म का बीजारोपण कर संस्कारों को पल्लवित और पुष्पित किए हैं। इसी भूमि को धर्म और अध्यात्म का गौरव सदा से प्राप्त हो रहा है। इसी भूमि पर जैन परंपरा के इतिहास में अनेक उद्भट आचार्य हुए हैं, जिन्होंने समय-समय पर अपने पराक्रम और पुरुषार्थ के द्वारा जैन धर्म के सिद्धांतों का प्रचार-प्रसार किया है तथा मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठापना में महनीय भूमिका निभाई है। इसी शृंखला में बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में तेरापंथ धर्मसंघ के नवम् पट्टधर हुए हैं—आचार्यश्री तुलसी।

बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी आचार्यश्री तुलसी एक संप्रदाय के आचार्य अवश्य थे, किंतु उनकी कार्यशैली संप्रदायातीत थी। इसीलिए तो उन्होंने धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक सभी क्षेत्रों में अपने वर्चस्वी जीवन व क्रांतिकारी विचारों से जागृति के नवीन प्रयोग किए। धार्मिक क्षेत्र में अपने संघीय गतिविधियों में परिवर्तन की लहर पैदा की। आचार्य पद पर आसीन होने के बाद शिक्षा, दीक्षा व विहार यात्रा में परिवर्तन किए। जहाँ उस समय का साध्वी समाज शिक्षा के क्षेत्र में बहुत पिछड़ा हुआ था। संस्कृत अथवा अंग्रेजी की बात तो बहुत दूर हिंदी का भी पूरा ज्ञान नहीं था। साध्वियों द्वारा हिंदी में व्याख्यान देना भी बहुत मुश्किल था। आचार्य तुलसी के पुरुषार्थ से वे ही साध्वियाँ हिंदी, संस्कृत व अंग्रेजी में धारा प्रवाह बोलने में सक्षम होती गई, उन्होंने साध्वियों की दीक्षा से पूर्व पारमार्थिक शिक्षण संस्थान का सूत्रपात किया, जिससे उस संस्था में रहकर वे अच्छे ढंग से अध्ययन कर सके। आज तेरापंथ धर्मसंघ का समणी वर्ग व साध्वी समाज सुदूर देशों की यात्राएँ व श्रावक समाज की सार-संभाल तो बखूबी करती ही है साथ ही अन्य सामाजिक व राष्ट्रीय संस्थाओं के प्रतिनिधियों को प्रतिबोध देकर उनका सही अर्थ में मार्गदर्शन भी करती है न केवल साध्वी समाज अपितु अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल से संबंध होकर समाज की महिलाएँ भी अपनी विशिष्ट पहचान बनाए हुए हैं। अनेक स्थानों पर इनकी शाखा मंडलों द्वारा नए-नए कार्यों, गतिविधियों को अंजाम दे रही है। घूँघट के पर्दे व चारदीवारी में कैद महिला समाज को अपनी अस्मिता की पहचान करवाकर शक्ति का अहसास कराने में आचार्यश्री तुलसी ने अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की है।

सामाजिक क्षेत्र में पहले वाली अनेक कुरूढ़ियों को दूर करने के लिए 'नया मोड' का सृजन किया। यद्यपि रूढ़िमुक्त समाज बनाने के लिए उन्होंने अनेक कड़वे घूँट भी पीए। क्योंकि जिस समाज में रूढ़ियाँ अथवा अंधविश्वास पलते हैं, वह समाज पिछड़कर सौ वर्ष पीछे चला जाता है। इसके लिए विरोधों के अनेक बवंडर झेलकर भी वे सदा आगे बढ़ते रहे हैं।

भगवान महावीर का परम सूत्र 'एगा माणुसी जाई' मनुष्य जाति एक है। जातिवाद, प्रांतवाद, भाषावाद, वर्णवाद के आधार पर मानव-मानव के बीच खाई उन्हें कतई पसंद नहीं थी। आचार्य तुलसी ने इसे प्रयोगात्मक तौर पर सामाजिक स्तर पर नीची कहलाने वाली कोम को अपने प्रवचन स्थल पर अग्रिम स्थान दिया। यद्यपि इसका समाज ने व्यापक स्तर पर विरोध को मुखरित किया किंतु उन्होंने कभी विरोध का जवाब विरोध से नहीं दिया। उन्होंने विरोध का भी विनोद के लहजे में उत्तर दिया। उनके अपनी मान्यता थी जो हमारा करे विरोध, हम उसे मानें विनोद। एक बार कुछ मतावलंबियों ने उनके विरोध स्वरूप सड़कों पर पोस्टर चिपका दिए आचार्य तुलसी ने कहा—'ये तो हमारे हितैषी हैं, क्योंकि इन पोस्टरों को चिपकाने से हमारे पैर काले नहीं होंगे।' इस तरह विरोध को टालकर शांति का परिचय दिया। विरोध को शांति से सहन करने वाला ही आगे बढ़ता है, विकास करता है।

अणुव्रत आंदोलन के सूत्रपात से पूर्व तेरापंथ धर्मसंघ एक संप्रदाय के घेरे में बंधा हुआ था किंतु देश की आजादी के साथ आचार्य तुलसी के मस्तिष्क में एक क्रांति का जन्म हुआ और यह क्रांति थी—नैतिक क्रांति। देश में नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठापना व चारित्रिक उन्नयन के लिए अणुव्रत आंदोलन का सूत्रपात किया। यद्यपि देश में अनेक प्रकार के आंदोलन समय-समय पर होते रहे, लेकिन नैतिक आंदोलन के रूप में पहली बार सामने आया। अणुव्रत आंदोलन वर्ण, जाति, संप्रदाय से मुक्त यह आंदोलन। 'सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय' की भावना से ओत-प्रोत है। इसके लिए स्वयं आचार्य तुलसी अपनी पद-यात्रा में सर्वप्रथम दिल्ली पधारे और वहाँ देश के प्रथम राष्ट्रपति बाबू राजेंद्र प्रसाद से संपर्क हुआ। राजेंद्र बाबू के संपर्क व सहयोग से प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू से भी मुलाकात हुई। चरित्र-निष्ठ, नैतिक-निष्ठ परिकल्पना की वार्ता से पंडित जवाहरलाल नेहरू भी बहुत प्रभावित हुए। यद्यपि पंडित जी के मन में धर्म व धर्म गुरुओं के प्रति विशेष आकर्षण कभी नहीं रहा। किंतु इस नैतिकता व चरित्र की बात का उन पर अच्छा प्रभाव पड़ा तथा उस आंदोलन के प्रचार-प्रसार में अपनी रुचि समर्थन प्रकट किया।

आचार्य तुलसी के शब्दों में अणुव्रत है—"अणुव्रत की आचार संहिता प्रवर कल्पना का परिणाम। स्फुरित हुआ धार्मिक चिंतन में नैतिकता क्यों बनी विराम नैतिकता से शून्य धर्म का कैसे कितना होगा मूल्य, मानव कैसे होगा मानव, मानवता सर्वोच्च अमूल्य।" इस अणुव्रत आंदोलन के माध्यम से स्वयं आचार्य तुलसी, उनके सैकड़ों जीवनदायी कार्यकर्ताओं ने राष्ट्रव्यापी स्तर पर इसका प्रचार-प्रसार किया। झुग्गी-झोंपड़ी हो अथवा राष्ट्रपति भवन व्यक्ति व्यक्ति में नैतिक मूल्यों व चरित्रनिष्ठा की भावना जागे। क्योंकि व्यक्ति से समाज व राष्ट्र सुधार संभव है। व्यक्ति एक इकाई है उसके सुधार की परिकल्पना से राष्ट्र का सुधार संभव है। अणुव्रत रूपी पक्षी के दो पंख स्वरूप प्रेक्षाध्यान और जीवन विज्ञान का अवदान प्राप्त हुआ, जिससे व्यक्ति तनाव मुक्त व स्वस्थ जीवन जी सके। जीवन विज्ञान वर्तमान बाल-पीढ़ी को सुसंस्कारी व स्वस्थता प्रदान करता है। शारीरिक, बौद्धिक, मानसिक, भावनात्मक स्वास्थ्य ही स्वस्थ जीवन के लक्षण हैं। जब तक सर्वांगीण विकास नहीं होता तब तक विकास की अवधारणा अधूरी रहती है। अतः प्रत्येक व्यक्ति को सर्वांगीण विकास का लक्ष्य बनाना चाहिए।

आचार्य तुलसी समयज्ञ, आगमज्ञ, वक्त्वज्ञ व सर्वकला-विशेषज्ञ पुरुष थे। समाज और राष्ट्र को दिशा और दशा के बदलाव में अपना पराक्रम और पुरुषार्थ को नियोजित करते रहें। समय की नब्ज पर सदैव अपना हाथ बनाए रखा। बाल, युवा, महिला वर्ग के साथ मजदूर, व्यापारी, राज्य-कर्मचारी, राजनेता अर्थात् समग्र मानव जाति के हितार्थ अपना संदेश दिया। मानव जाति के हितार्थ व कृतार्थ करने के उद्देश्य से उन्होंने पुरुषार्थ किया एवं उनमें सफलताएँ अर्जित की। ऐसे महापुरुष शताब्दी अथवा सहस्राब्दी में कभी-कभी ही हुआ करते हैं, जिनके अवदानों से समग्र मानव जाति कृतकृत्य हो जाती है और उनको स्मरण कर आत्मानंद की अनुभूति करती है, उनके इस महाप्रयाण दिवस पर हम धन्यता का अनुभव करें तथा उनके संयम जीवन की ज्ञान रश्मियों से अपने आपको निष्णात करें। यही उनके प्रति सच्ची भावांजलि होगी।

जिन्हें जरूरत हो वह करे और खुदाओं की तलाश, हम तो तुलसी को दुनिया का खुदा कहते हैं।

आचार्यश्री तुलसी के २७वें महाप्रयाण दिवस पर

अर्हम

● शासनश्री मुनि विजय कुमार ●

गुरु तुलसी की गौरव गाथा, जन-जन अपने मुँह पर गाता,
महापुरुषों में वह था विशिष्ट, हर कोई का सिर झुक जाता,
गुरु तुलसी की जय बोलें, आत्मा का कल्मष धो लें,
बलिहारी, गुरुवर की जायें हम।

भावों में श्रद्धा घोलें, मन मंदिर के पट खोलें, बलिहारी---
कार्तिक शुक्ला दूज दिवस खटेड़ कुल में खुशियाँ छाई,
माँ वदना को यह रत्न मिला, सौभाग्यवती वह कहलाई,
कुमकुम के पदचिह्न देख, बोले सब सुत है वरदायी,
है चहल-पहल घर में विशेष, बासंती बयार ज्यों आई,
गुरु तुलसी की जय बोलें---बलिहारी, गुरुवर की जायें हम।
जय हो, जय-जय हो, जय-जय हो, जय हो।।१।।

कालू गुरु चंदेरी आये, आभामंडल का आकर्षण,
बालक का है ज्यों भाग्य खिला, करता है बार-बार दर्शन,
प्रकटी है पिछली पुण्यायी, अर्पित कर दूं इनको जीवन,
संयम पथ को स्वीकार करूं, इन चरणों का लूं आलंबन,
गुरु तुलसी की---बलिहारी गुरुवर की जायें हम, जय हो---।।२।।

बाइस वर्ष की लघुवय में, गण का नेतृत्व संभाल लिया,
शासन की महिमा खूब बढ़ी, संत-सतियों का निर्माण किया,
नहीं भाग्य भरोसे रहा कभी, पौरुष का जीवन सदा जिया,
लंबी-लंबी यात्रा करके, सबको अणुव्रत का संदेश दिया,
गुरु तुलसी की---बलिहारी गुरुवर की जायें हम, जय हो---।।३।।

वह महापुरुष था अलबेला, अवदानों से इतिहास भरा,
मुस्कानों का बहता निर्झर, वह खिलता ज्यों उद्यान हरा,
थी हुई कसौटी जीवन में, पर वह उतरा हर बार खरा,
उसके जय-जय के नारों से, है 'विजय' गूंजती गगन धरा,
गुरु तुलसी की---बलिहारी गुरुवर की जायें हम, जय हो---।।४।।

दीक्षार्थी अभिनंदन एवं मंगलभावना समारोह

मध्य-उत्तर कोलकाता।

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में मध्य-उत्तर कोलकाता तेरापंथी सभा द्वारा दीक्षार्थी अभिनंदन एवं मंगलभावना समारोह का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि जैन धर्म में दीक्षा का बड़ा महत्त्व है। इच्छा का निरोध करना ही एक मायने में दीक्षा है। दीक्षा अनंत की यात्रा है। दीक्षा सहज नहीं कठिन कार्य है। हमारा सतत् लक्ष्य आत्मा की रक्षा होनी चाहिए। आत्मा दुर्गति में न जाए यह हमेशा ध्यान रखना चाहिए। मुनिश्री ने आगे कहा कि तेरापंथ में दीक्षित होने का अर्थ है—अहंकार और ममता का विसर्जन।

बाल मुनि कुणाल कुमार जी ने सुमधुर गीत का संगान किया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि गुडिया मिशन के संन्यासी ऋषिकेश महाराज ने अपने विचार व्यक्त करते हुए दीक्षार्थी बहनों के प्रति मंगलभावना व्यक्त की। दीक्षार्थी अंकित चोरड़िया, संजना पारख ने अपने वैराग्य भावों की प्रस्तुति दी। रिचा सांखला ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का शुभारंभ मध्य कोलकाता तेमम की बहनों के मंगल गीत से हुआ। आभार ज्ञापन सुभाष गुजरानी ने किया तथा कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंद जी व आदित्य संचेती ने किया। अतिथियों व दीक्षार्थियों का तेरापंथी सभा द्वारा सम्मान किया गया।

श्रद्धा वर्धक सामायिक जप अनुष्ठान

जयपुर।

आचार्यश्री महाश्रमण दीक्षा कल्याण महोत्सव के उपलक्ष्य में श्रद्धावर्धक सामायिक जप अनुष्ठान का आयोजन तेरापंथ भवन में, भिक्षु साधना केंद्र में मुनि तत्त्वरुचि जी एवं मुनि संभवकुमार जी, अणुविभा, जयपुर केंद्र में शासन गौरव बहुश्रुत साध्वी कनकश्री जी, टैगोर नगर में साध्वी मंगलप्रभा जी के सान्निध्य में किया गया। कार्यक्रम में तेयुप, जयपुर के पदाधिकारियों, कार्यसमिति सदस्यों सहित अनेकों श्रावक-श्राविकाओं ने ॐ ह्रीं श्रीं महाश्रमण गुरवे नमः मंत्र का जाप किया।

आचार्यश्री महाश्रमण जी का जन्मोत्सव, पदाभिषेक एवं दीक्षा दिवस के आयोजन

रोहिणी, दिल्ली

साध्वी कुंदनरेखा जी के सान्निध्य में तेरापंथी सभा के तत्त्वावधान में आचार्यश्री महाश्रमण जी का पदाभिषेक दिवस मनाया गया। इस अवसर पर साध्वी कुंदनरेखा जी ने कहा कि आढगणी संपदा के धारक युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी अध्यातम चेतना के महापुरोधा हैं, जो अपनी तेजस्विता, वर्चस्विता और ओजस्विता से संपूर्ण मानव जाति की अध्यात्म शक्ति को जगाने हेतु सतत प्रयासरत हैं। ऐसे महापुरुष की सन्निधि युगों-युगों तक जन-जन तक मिलती रहे, प्रकाश स्तंभ की तरह प्रकाशित करती रहे, शुभकामना।

इस अवसर पर साध्वी सौभाग्ययशा जी, साध्वी कल्याणयशा जी, साध्वी कर्तव्ययशा जी ने अपनी अनंत भावना के द्वारा गुरुदेव की अभ्यर्थना की। दिल्ली स्वास्थ्य विभाग के श्याम सुंदर जैन, रतनलाल जैन एवं विमला सुराणा ने अपने विचार व्यक्त किए।

गुवाहाटी

तेरापंथी सभा के तत्त्वावधान में आचार्यश्री महाश्रमण जी का १४वाँ पट्टोत्सव दिवस मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ अर्हम भजन मंडली के द्वारा मंगलाचरण से हुआ। इस अवसर पर संचालन तेरापंथी सभा मंत्री रायचंद पटावरी ने किया।

तेरापंथी सभा उपाध्यक्ष पवन जम्मड़, तेरापंथी महासभा के आंचलिक प्रभारी बसंत कुमार सुराणा, तेमम की अध्यक्षा मंजु भंसाली, तेयुप सहमंत्री तरुण बैद सहित अनेक सभा-संस्थाओं के पदाधिकारीगण एवं सदस्यों की उपस्थिति रही। ज्ञानशाला के बच्चों ने रोचक प्रस्तुति दी। महिला मंडल ने गीत प्रस्तुत किया।

रामनगर, दिल्ली

साध्वी अणिमाश्री जी के सान्निध्य में रामनगर में तेरापंथ के राम आचार्यश्री महाश्रमण जी का ६२वाँ जन्म दिवस मनाया गया।

साध्वीश्री जी ने कहा कि आज सिर्फ आचार्यश्री महाश्रमण जी का ही जन्म दिवस नहीं, आज तो विनम्रता के शिखर पुरुष का जन्म दिवस है। समर्पण के शलाकापुरुष का जन्म दिवस है। संघ भक्ति, गुरुभक्ति का इतिहास रचने वाले इतिहास पुरुष का है।

साध्वी कर्णिकाश्री जी ने कहा कि आचार्यश्री महाश्रमण जी संकल्प पुरुष हैं। उनके संकल्प बल ने तेरापंथ धर्मसंघ में कीर्तिमान बनाए हैं। कीर्तिपुरुष की भावभीनी अभिवंदना।

डॉ० साध्वी सुधाप्रभा जी ने कहा कि आचार्य महाश्रमण जी की साधना में सूर्य जैसी तेजस्विता है, हृदय में विशालता है। साध्वी मैत्रीप्रभा जी ने उद्गार व्यक्त किए। साध्वी समत्वयशा जी ने संचालन किया। हर्षा नाहटा ने गीत का संगान किया। सुरेश भंसाली एवं संजय जैन ने अपने भावों की प्रस्तुति दी। रामनगर सामायिक मंडल की बहनों ने गीत का संगान किया।

बालोतरा

आचार्यश्री महाश्रमण जी का १४वाँ पदाभिषेक महोत्सव तेरापंथ भवन, बालोतरा में शासनश्री साध्वी सत्यप्रभा जी के सान्निध्य में मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत मंगलाचरण से शेफाली चोपड़ा द्वारा किया गया।

शासनश्री साध्वी सत्यप्रभा जी ने कहा कि आचार्यश्री महाश्रमण जी शांतिधर व्यक्तित्व के धनी थे। उनके चेहरे पर हमेशा मुस्कान रहती है। उनका आहार संयम एवं इंद्रिय संयम बेजोड़ है।

शासनश्री साध्वी सत्यवती जी ने कहा कि आचार्यश्री महाश्रमण जी, शांतिश्रुत, तपश्रुत, दानश्रुत एवं युद्धश्रुत—चार व्यक्तित्व के धनी हैं। साध्वी पुण्यप्रभा जी ने कहा कि आचार्यश्री की शीतल नजर, अप्रमयता, समय का प्रबंधन, आचारनिष्ठा के धनी हैं।

तेरापंथी सभा अध्यक्ष धनराज ओस्तवाल, महिला मंडल अध्यक्षा निर्मला संकलेचा, अभातेमम कार्यसमिति सदस्य सारिका वागरेचा, सिवांची क्षेत्रीय संस्थान अध्यक्ष डूंगरचंद सालेचा ने गुरु के प्रति अभ्यर्थना की।

ज्ञानशाला की पीसा मेहता ने विशेष प्रस्तुति दी। चंपालाल बालड़ द्वारा गीतिका एवं तेमम द्वारा चित्रण संवाद एवं गीतिका प्रस्तुत की गई। कार्यक्रम का संचालन मंत्री महेंद्र कुमार वैद ने किया।

मदुरै

आचार्यश्री महाश्रमण जी की दीक्षा के ५० वर्ष का समायोजन 'दीक्षा कल्याणक महोत्सव वर्ष' के रूप में होने जा रहा है। कार्यक्रम तेरापंथी सभा के तत्त्वावधान में आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ कोमल जीरावाला द्वारा महाश्रमण अष्टकम् से हुआ।

तेरापंथ सभा के अध्यक्ष अशोक कुमार जीरावाला ने कहा कि गुरुदेव आचार्यश्री महाश्रमण जी का जीवन बहुआयामी है। पूज्यप्रवर सरल, शांत व विनम्र हैं।

कार्यक्रम में तेरापंथ ट्रस्ट अध्यक्ष ओमप्रकाश कोठारी, तेमम अध्यक्ष नैना पारख, तेयुप अध्यक्ष जीतेंद्र चोपड़ा सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं सदस्यों की उपस्थिति रही।

अनिता चोपड़ा ने आचार्य तुलसी शिक्षा परियोजना के अंतर्गत तत्त्वज्ञान परीक्षा के रिजल्ट द्वारा परिणाम सुनाया और महिला मंडल द्वारा उनको सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन सभा अध्यक्ष अशोक जीरावाला ने किया। धन्यवाद ज्ञापन सभा के सहमंत्री जितेंद्र सुराणा ने किया।

भट्टू मंडी (हरियाणा)

शासनश्री साध्वी सुमनश्री जी के सान्निध्य में महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी का ६२वाँ जन्म दिवस एवं पट्टोत्सव का कार्यक्रम उल्लास के साथ तेरापंथ सभा भवन में मनाया गया। साध्वी मंगलप्रभा जी के महाश्रमण अष्टकम् संगान से कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। नन्ही-नन्ही बालिकाओं ने महामंत्र संगान के नृत्य के साथ सुंदर प्रस्तुति दी। महिला मंडल का भावपूर्ण गीत हुआ।

साध्वी सुमनश्री जी ने कहा कि आपके जीवन में शिखरों की ऊँचाईयाँ हैं, सागर-सी गहराई है। गुणरत्नों का समवाय है। विनय वात्सल्य और समर्पण से पूरे धर्मसंघ को आप आगे बढ़ा रहे हैं। संपूर्ण जैन समाज की नजरें महाश्रमण पर टिकी हुई हैं।

बचपन से आप बड़े होनहार थे। माँ नेमा ने ऐसे कोहिनूर हीरे को गुरु चरणों में समर्पित किया, जिसकी छत्र छाँव में पूरा धर्मसंघ विकास के नए-नए पायदान गढ़ रहा है। साध्वी मधुरलता जी ने गीत से पूज्यप्रवर की अभिवंदना की।

सभा अध्यक्ष सोहनलाल गर्ग ने स्वागत भाषण दिया। मदर टेरेसा स्कूल के बच्चों ने भावपूर्ण गीत, आदमपुर मंडी के सभा अध्यक्ष राधेश्याम जैन, घीसाराम जैन, महिला मंडल व बच्चों ने भी सामायिक सुंदर विचार रखे। पूजा जैन, राजेश बंसल, सविता जैन, डॉ० विजय बंसल आदि कई श्रद्धालुओं ने अपने सामायिक विचार रखे। बाहर से समागत अतिथियों का सम्मान साहित्य से किया गया। ज्ञानशाला के बच्चों ने प्रस्तुति दी। सभी बच्चों को प्रोत्साहन पुरस्कार तेरापंथी सभा, भट्टू मंडी द्वारा दिया गया। कार्यक्रम का संचालन राजेश जैन ने किया।

अंधेरी

आचार्यश्री महाश्रमण जी के ६२वाँ जन्म दिवस एवं १४वाँ पदाभिषेक दिवस मनाया गया। इस अवसर पर साध्वी निर्वाणश्री जी ने कहा कि आचार्यश्री महाश्रमण जी का जीवन प्रारंभ से ही विलक्षण रहा है। बाल्यकाल से ही मुनि मुदित साधना के उच्च पायदानों पर आरूढ़ होते रहे हैं। उनकी जीवन यात्रा मोहन से मुदित, मुदित से महाश्रमण और पुनः युवाचार्य व आचार्य पद के अभिराम पथ पर गतिमान है।

इस अवसर पर साध्वी डॉ० योगक्षेमप्रभा जी ने कहा कि आचार्यश्री महाश्रमण जी अतिशायी महापुरुष हैं। कीर्तिमान बनाए नहीं जाते, निर्मित हो रहे हैं। उनका जन्म मानव कल्याण व जिनशासन की प्रभावना के लिए हुआ है।

साध्वी मधुरप्रभा जी ने अमृत अर्चना के माध्यम से मंगलाचरण किया। बालिका प्रीषा लिंगा ने अंधेरी ज्ञानशाला की ओर से भावना प्रकट की। आचार्य महाश्रमण चातुर्मास व्यवस्था समिति के मुख्य प्रबंधक मनोहर गोखरू ने अपने उद्गार व्यक्त किए। समागत अतिथियों का स्वागत तेरापंथ सभा के अध्यक्ष चैनरूप दुगड़ तथा अध्यक्ष किरण रोठांगण ने किया। इस अवसर पर घाटकोपर तुलसी सुसंगम से संगायकों ने लोकेश डांगी के नेतृत्व में गीत का संगान किया।

साध्वीवृंद ने गीत की प्रस्तुति दी। मंच संचालन सभा के मंत्री ललित लोढ़ा ने किया। कैमरून हाईट के नवनिर्वाचित चेयरमैन प्रदीप बोकड़िया ने सबके प्रति आभार व्यक्त किया। मरूधर मित्र परिषद् के अध्यक्ष अशोक सिंघी ने भी अपने भाव प्रकट किए।

मंत्री ललित लोढ़ा ने साध्वीश्री जी एवं साध्वीवृंद के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की।

कोटा

तेरापंथी सभा के तत्त्वावधान में गुलाबबाड़ी स्थित तेरापंथ भवन में साध्वी शासनश्री धनश्री जी के सान्निध्य में आचार्यश्री महाश्रमण जी का ६२वाँ जन्मोत्सव एवं १४वाँ पट्टोत्सव कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर साध्वी धनश्री जी ने कहा कि ज्ञान भक्ति और गुणों का समवाय है महाश्रमण। उन्होंने गुरुदेव के संकल्प शक्ति के पाँच सोपान के बारे में बताया।

साध्वी शीलयशा जी एवं साध्वी विदितप्रभा जी ने अपने उद्गार व्यक्त किए। साध्वी सलिलयशा जी ने गीत के माध्यम से प्रस्तुति दी। महिला मंडल ने नाटिका की प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम के प्रारंभ में सौरभ दसानी ने मंगलचारण किया। सभा अध्यक्ष संजय बोथरा, अणुव्रत समिति के मंत्री भूपेंद्र बरड़िया ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन साध्वी विदितप्रभा जी ने किया।

भीलवाड़ा

अणुव्रत साधना सदन स्कूल शास्त्रीनगर में आचार्यश्री महाश्रमण जी का जन्मोत्सव, पट्टोत्सव एवं दीक्षा दिवस के उपलक्ष्य में महाश्रमणोत्सु मंगलम् अभ्यर्थना कार्यक्रम आयोजित किया गया।

इस अवसर पर शासनश्री सुनी हर्षलाल ने कहा कि आचार्यश्री महाश्रमण जी तेरापंथ धर्मसंघ के ११वें अधिशास्ता हैं। निस्पृहता, निर्लिप्तता, निर्विकारता, निरहंकारिता से आपका आंतरिक व्यक्तित्व महात्म्य को प्राप्त हुआ है। अहिंसा और नैतिकता की प्रतिष्ठापना के लिए आप सतत संलग्न हैं।

मुनि यशवंत कुमार जी ने कहा कि आचार्यश्री महाश्रमण जी का जीवन धैर्य, गंभीरता, विनम्रता, समर्पण का समवाय है। आपने मानव जाति के उद्धार के लिए प्रलंभ अहिंसा यात्रा की।

मुनि मोक्ष कुमार जी ने अपने जीवन में आचार्य महाश्रमण जी के प्रसंग के साथ कविता प्रस्तुत की। इसी क्रम में मुख्य वक्ता के रूप में महेंद्र कर्णावट ने और मुख्य अतिथि के रूप में महेंद्र ओस्तवाल ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का शुभारंभ जीविका चोरड़िया के मंगलाचरण से हुआ। कार्यक्रम में अन्य गणमान्यजन उपस्थित थे।

तेमम व भिक्षु भजन मंडली ने गीत के द्वारा आराध्य की अभ्यर्थना की। कार्यक्रम का संचालन मुनि प्रतीक कुमार जी ने किया।

बैंगलोर

आचार्यश्री महाश्रमण जी के १४वें पदाभिषेक दिवस एवं मुनि दीप कुमार जी का बैंगलोर नगर प्रवेश कार्यक्रम तेरापंथी सभा विजयनगर द्वारा आयोजित हुआ। कार्यक्रम में विजयनगर, बैंगलोर, होसकोटे, हनुमंत नगर के लोग उपस्थित थे।

मुनि दीप कुमार जी ने कहा आचार्यश्री महाश्रमण जी ओजस्वी, तेजस्वी, वर्चस्वी धर्माचार्य हैं। आचार्यश्री बहुत कुशल ढंग से धर्मसंघ का नेतृत्व कर रहे हैं। सैकड़ों साधु-साध्वियाँ, समणियाँ, लाखों की संख्या में श्रावक समाज इन सबका अध्यात्मिक नेतृत्व आचार्यप्रवर करा रहे हैं।

मुनि काव्य कुमार जी ने कहा कि आचार्यश्री महाश्रमण जी समता के सागर हैं। वे अनुत्तर हैं, बैंगलोर मेरी कर्मभूमि है। यहाँ आकर बहुत प्रसन्नता हो रही है।

कार्यक्रम में तेरापंथी सभा, विजयनगर के अध्यक्ष प्रकाश गांधी, तेयुप मंत्री राकेश पोकरणा, होसकोटे सभा अध्यक्ष इंदरचंद धोका, अनीषा बाबेल आदि ने आचार्यश्री की अभिवंदना एवं मुनिश्री का स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन विजयनगर, सभा मंत्री मंगल कोचर ने किया।

✦ *प्रवृत्ति को छोड़ना कठिन है, परंतु प्रवृत्ति में होने वाली आसक्ति को छोड़ा जा सकता है। फिर प्रवृत्ति तुम्हारी आत्मा को मलिन बनाने वाली नहीं बनेगी।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

मनोनुशासनम्

❑ आचार्य तुलसी ❑

चौथा प्रकरण

(१) स्वरूपमधिजिगमिषुर्ध्याता।।
(२) आरोग्यवान् दृढ़संहननो विनीतोऽकृतकलहो रसाप्रतिबद्धोऽप्रमत्तोऽनलसश्च।।
(३) मुमुक्षुः संवृतश्च।।
(४) स्थिराशयत्वमस्य।।

(१) जिस व्यक्ति में स्वरूप-जिज्ञासा—अपना मौलिक रूप जानने की भावना होती है, वही ध्याता—ध्यान का अधिकारी होता है।

(२) ध्यान का अधिकारी वही हो सकता है, जो आरोग्यवान् हो, दृढ़ शरीर वाला हो, विनीत हो, उपशांत-कलह हो, रसलोलुप न हो, अप्रमत्त हो और आलसी न हो। इसका तात्पर्य यह है कि रोग, शरीर-दुर्बलता, अविनय, कलह, रसलोलुपता, प्रमाद और आलस्य—ये ध्यान की साधना के विघ्न हैं। मन को अनुशासित वही कर सकता है, जो इनसे बचे।

(३) वही व्यक्ति ध्यान का अधिकारी होता है, जो मुमुक्षु और संवृत है। जिसमें मुक्त होने की इच्छा होती है, वह मुमुक्षु कहलाता है। जिसमें संवरण की क्षमता होती है, वह संवृत होता है।

(४) ध्यान के द्वारा ध्याता का आशय स्थिर हो जाता है—चित्त की चंचलता दूर हो जाती है।

ध्यान की योग्यता

किसी एक बिंदु पर एकाग्र होना, विचारों को एक ही दिशा में प्रवाहित करना या विचारातीत होना सरल कार्य नहीं है, इन सबके लिए शारीरिक और मानसिक विकास की अपेक्षा होती है। शारीरिक चंचलता को विसर्जित किए बिना क्या कोई व्यक्ति ध्यान का अधिकारी बन सकता है? मानसिक अभ्यास को पुष्ट किए बिना क्या कोई ध्यान का अधिकारी बन सकता है। ध्यान की पहली योग्यता है—स्वरूप की जिज्ञासा। जो दृश्य है—वह स्वरूप नहीं है। अपना अस्तित्व नहीं है। जो निजी अस्तित्व है वह बहुत सूक्ष्म है और सूक्ष्म होने के कारण वह चर्म चक्षु द्वारा दृश्य नहीं है। उसे देखने की उत्कट आकांक्षा हुए बिना वह दिखाई भी नहीं देता।

प्रारंभ में ध्यान बहुत सरस नहीं लगता। स्थूल प्रवृत्ति को छोड़कर निष्क्रिय मुद्रा में बैठा जाना अच्छा लग भी कैसे सकता है? किंतु ऐसा वही कर सकता है जिसके मन में इस स्थूल शरीर के भीतर छिपे हुए सूक्ष्म परमतत्त्व को जानने की उत्कट आकांक्षा प्रकट हो जाती है।

निशाना साधने में भी एकाग्रता होती है। प्रिय का वियोग होने पर उसे पाने और अप्रिय का संयोग होने पर उसे दूर करने के लिए भी मन एकाग्र बनता है, किंतु उस एकाग्रता से चित्त निर्मल नहीं होता। फलतः उससे परमतत्त्व प्रकाशित नहीं होता। उसे प्रकट करने के लिए चित्त की निर्मलता आवश्यक होती है और चैत्तिक निर्मलता के लिए अपने दोषातीत अस्तित्व पर चित्त को केंद्रित करना आवश्यक होता है। इस प्रक्रिया में स्वरूप की जिज्ञासा ध्यान का पहला सोपान है।

स्वरूप की जिज्ञासा के प्रबल होने पर साधक में दो विशेष गुण विकसित होते हैं—

(१) मुमुक्षा, (२) संवृतत्त्व।

मुमुक्षा का अर्थ है—उन सारी प्रवृत्तियों से मुक्त होने की इच्छा, जो स्वरूप की उपलब्धि में बाधक बनती हैं। दूसरे शब्दों में वह स्वतंत्रता जो परिस्थिति आदि से भी प्रताड़ित नहीं होती। यह (मुमुक्षा) जितनी समर्थ होती है, उतनी ही ध्यान की क्षमता बढ़ती है। इसलिए ध्याता का मुमुक्षु होना जरूरी है।

संवृतत्त्व का अर्थ है—इंद्रिय और मन की अंतर्मुखी प्रवृत्ति। उनकी बहिर्मुखी प्रवृत्ति रहती है तब तक साधक वैषयिक सुखों से विरक्त नहीं होता। वैषयिक सुखों की अनुरक्ति होना ध्यान के लिए अनुकूल नहीं है। इसलिए ध्याता का संवृत्त होना जरूरी है।

स्वरूप की जिज्ञासा होने पर भी ध्यान की सफलता पाना निश्चित नहीं है। उसके अनेक विघ्न हैं। उनका निरसन किए बिना ध्याता आगे नहीं बढ़ सकता। स्थूल दृष्टि के अनुसार ध्यान के विघ्नों का वर्गीकरण इस प्रकार किया जा सकता है—

(१) रोग, (२) शारीरिक संहनन (अस्थि-रचना) की दुर्बलता, (३) उद्दंड मनोभाव, (४) झगड़ालू मनोवृत्ति, (५) खाद्य-संयम का अभाव, (६) प्रमाद (विस्मृति), (७) आलस्य।

इन विघ्नों में कुछ शारीरिक हैं और कुछ मानसिक। शारीरिक विघ्नों को आसन, प्राणायाम आदि के अभ्यास द्वारा निरस्त किया जा सकता है और मानसिक विघ्नों को दूर करने के लिए सतत जागरूक रहना जरूरी है। अपने स्वरूप के प्रति जागरूक रहना ध्यान का प्रथम या अंतिम उपाय है अथवा वही ध्यान है।

हम ध्यान की उपयोगिता को तभी अस्वीकार कर देते यदि उसके द्वारा चित्त की स्थिरता प्राप्त नहीं होती। एक सीमा तक चित्त की चंचलता सह्य होती है, किंतु उसकी चंचलता पर कोई नियंत्रण नहीं होता तब वह आगे से आगे बढ़ती जाती है। एक दिन उसका बढ़ना असह्य हो उठता है। यही मानसिक अशांति है। इसके निवारण का उपाय या मानसिक शांति का उपाय है—चंचलता की मात्रा को फिर से कम करना। यह कार्य ध्यान के द्वारा ही किया जा सकता है।

(५) ईषदवनतकायो निमीलितनयनो गुप्तसर्वेन्द्रियग्रामः सुप्रणिहितगात्रः प्रलम्बितभुजदंडः सुश्लिष्टचरणः पूर्वोत्तराभिमुखो ध्यायेत्।।
(६) पद्मासनादिषु निषण्णो वा।।

(५) ध्यान करने वाला व्यक्ति शरीर को आगे की ओर थोड़ा-सा झुकाकर, नेत्रों को मूंदकर, इंद्रियों को विषयों से निवृत्त कर, शरीर को सुस्थिर व शिथिल बनाकर, बाँहों को घुटनों की ओर प्रलंबित कर, पैरों की एड़ियों को परस्पर मिलाकर पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुँह कर ध्यान करे।

(६) अथवा पद्मासन आदि लगाकर ध्यान करना चाहिए।

ध्यान-मुद्रा

ध्यान की परिपक्वता होने के पश्चात् चाहे जिस मुद्रा में ध्यान किया जा सकता है, किंतु जब तक उसका अभ्यास परिपक्व नहीं होता, तब तक कुछ निश्चित मुद्राओं में बैठकर ध्यान करना उपयोगी होता है।

ध्यान खड़े होकर भी किया जा सकता है और बैठकर भी किया जा सकता है। खड़े होकर ध्यान करने की मुद्रा को कायोत्सर्ग कहा जाता है। उसका निश्चय शारीरिक और मानसिक संबंध के आधार पर किया गया है। प्रस्तुत मुद्रा में मुख्य बातें ये हैं—

(१) शरीर का आगे की ओर थोड़ा-सा झुका हुआ होना।
(२) आँखों को मूँदना या अधखुली रखना।
(३) इंद्रियों का संयम करना।
(४) शरीर को स्थिर रखना।
(५) भुजाओं को लटकाकर घुटने से सटाए रखना।
(६) पैरों की एड़ियों को सटाए व दोनों पंजों के बीच चार अंगुल का अंतर रखना।
(७) पूर्व या उत्तर दिशा के अभिमुख होना।

ध्यानकाल में शरीर सीधा होना चाहिए। यह ध्यान का सामान्य नियम है। आगे की ओर थोड़ा झुकने का अर्थ उस नियम का अतिक्रमण नहीं है। मानसिक एकाग्रता के साथ श्वास का गहरा संबंध है। फेफड़े और गले को थोड़ा आगे झुकाने से श्वास के समीकरण की सुविधा होती है। इस दृष्टि से इसका बहुत महत्त्व है।

मानसिक एकाग्रता के लिए आँखों का संयम होना अत्यंत अनिवार्य है। चंचलता की वृद्धि में उनका बहुत बड़ा योग है। आँखें मूँद लेने पर चाक्षुष एकांत हो जाता है। उन्हें अधखुला भी रखा जा सकता है। नासाग्र या किसी चक्र पर एकाग्र किया जाए तो उन्हें खुला भी रखा जा सकता है। ध्यान में केवल चाक्षुष एकांत ही अपेक्षित नहीं किंतु सभी इंद्रियों का एकांत होना आवश्यक है। इसी तथ्य को ध्यान में रखकर ध्याता के लिए सर्वेन्द्रिय-संयम मुद्रा का निर्देश दिया गया है।

शरीर की स्थिरता मन की स्थिरता का आधार है। इस दृष्टि से शरीर का सुप्रणिधान करना बहुत उपयोगी है। प्रणिधान निर्मलता और स्थिरता के द्वारा प्रकट होता है। शरीर की निर्मलता नाड़ी-शोधन के द्वारा प्राप्त होती है और उसके होने पर ही वांछनीय स्थिरता प्राप्त होती है।

नाड़ी-शोधन के लिए समवृत्ति प्राणायाम बहुत उपयोगी है। दिन-रात में तीन या चार बार समवृत्ति प्राणायाम करने तथा प्रत्येक बार में ६० से ८० तक की पुनरावृत्ति तक पहुँच जाने पर नाड़ी-शोधन हो जाता है।

खड़े होकर ध्यान किया जाता है तब भुजदंड का प्रलंबित होना आवश्यक है। बायीं अंजलि पर दायीं अंजलि टिका तथा दोनों अंजलियों को नाभि से सटाकर भी ध्यान किया जाता है, किंतु खड़े होकर किए जाने वाले ध्यान में अधिकांशतया प्रलंबित भुजा की पद्धति ही प्रचलित रही है। इसका हार्द यही होना चाहिए कि ध्यानकाल में प्रवाहित होने वाली शक्ति तरंगें शरीर के बाहर न जाकर पुनः उसमें ही समाहित हो जाएँ।

दोनों पैर परस्पर सटे हुए होने चाहिए। दोनों एड़ियाँ भी सटी हुई होनी चाहिए किंतु पंजों के बीच में चार अंगुल का अंतर रहना आवश्यक है। इसमें लंबे समय तक स्थिर मुद्रा में अभ्यास करने में सुविधा होती है। शिथिलता या स्थिरता प्राप्त करने में अधिक कठिनाई नहीं होती।

(क्रमशः)

संबोधि

❑ आचार्य महाप्रज्ञ ❑

बंध-मोक्षवाद

मिथ्या-सम्यग्-ज्ञान-मीमांसा

भगवान् प्राह

(९) शोधिः ऋजुकभूतस्य, धर्मः शुद्धस्य निष्ठति।
निर्वाणं परम याति, धृतसिक्त इवानलः।।

महाभारत का शांति पर्व भी यही गीत गाता है–

ये च मूढ़तमा लोके, ये च बुद्धेः परं गताः।
त एव सुखमेधन्ते, मध्यमः क्लिश्यते जनः।।

'संसार में दो ही प्रकार के व्यक्ति आनंद का अनुभव कर सकते हैं, एक अज्ञानी और दूसरा परम ज्ञानी। बीच वाले मनुष्य तो केवल दुःख पाते हैं।

चेतना सरल है। असरलता उसमें बाहर से प्रविष्ट हो गई। सरल होने के लिए करने की कुछ जरूरत नहीं है। जरूरत है असरलता (कपट) का प्रवेश होने न पाए। बाहर का मुखौटा हटा कि स्वयं का चेहरा उद्दीप्त हुआ (उभर आया)। स्वभाव के लिए कुछ और करना, उसे जटिल बनाने जैसा होगा। बस, उसके लिए अप्रमत्त–सजग रहना पर्याप्त है कि विभाव आपके अंदर न घुसे। महावीर कहते हैं–'जैसे ही आप स्वयं के भीतर प्रविष्ट हुए, सरल बने कि घृतसिक्त अग्नि की भाँति परम तेजस्विता को उपलब्ध हो जाएँगे।'

स्वामी रामकृष्ण परमहंस ने कहा है–'अनेक जन्मों के पुण्य से मनुष्य को सरल और उदार भाव प्राप्त होता है।

मनुष्य सरल स्वभाव वाला हुए बिना ईश्वर को प्राप्त नहीं कर सकता।

(१०) नियत्या नाम सञ्जाते, परिपाके भवस्थितेः।
मोहकं क्षपयन् कर्म, विमर्शं लाभतेऽमलम्।।

नियति के द्वारा भवस्थिति के पकने पर जीव मोह-कर्म का नाश करता हुआ विशद विचारणा को प्राप्त होता है।

(११) तत्किं नाम भवेत् कर्म, येनाऽहं स्यान्न दुःखभाक्।
जिज्ञासा जायते तीव्रा, ततो मार्गो विमृश्यते।।

वह कौन-सा कर्म है, जिसका आचरण कर मैं दुःखी न बनूँ? मनुष्य में ऐसी तीव्र जिज्ञासा उत्पन्न होती है। उसके पश्चात् वह मार्ग की खोज करता है।

जैन दर्शन दुःख-मुक्ति का दर्शन है। जैन मनीषियों ने सारे संसार को दुःख मय देखा और यहाँ सारे संयोग-वियोगों को दुःख परंपरा को तीव्र करने वाला माना। यहीं से जैन साधना-पद्धति का प्रारंभ हुआ।

भगवान् महावीर ने कहा–

जम्म दुक्खं जरा दुक्खं, रोगाणि मरणाणि य।
अहो दुक्खो हु संसारो, जत्थ कीसंति पाणिणो।।

– जन्म दुःख है। बुढ़ापा दुःख है। रोग दुःख है। मरण दुःख है। सारा संसार दुःखमय है जहाँ प्रत्येक प्राणी दुःख पा रहा है।

इस दुःखवादी दृष्टिकोण ने जैन साधक को पग-पग पर सचेष्ट रहने की प्रेरणा दी।

जैन दर्शन के चार आधार-बिंदु हैं–(१) दुःख है, (२) दुःख का कारण है, (३) मोक्ष है, (४) मोक्ष का कारण है।

इन चार सत्यों के आधार पर सारा दर्शन खड़ा हुआ है।

साधक साधना-जीवन में प्रवेश करते ही पूछता है–ऐसा कौन-सा कार्य है जो दुःख मुक्त कर सकता है? दुःख से मुक्त होने की भावना ज्यों-ज्यों तीव्र होती है साधक का जीवन उतना ही प्रकाशमय होता जाता है।

(क्रमशः)

अवबोध

❑ मंत्री मुनि सुमेरमल 'लाडनूं' ❑

कर्म बोध

प्रकृति व करण

प्रश्न ९ : गोत्र कर्म बंध के क्या कारण हैं?

उत्तर : गोत्र कर्म बंध के आठ कारण हैं–
जाति, कुल, बल, रूप, तपस्या, श्रुत, लाभ, ऐश्वर्य
अहंकार करने से नीच गोत्र व न करने से उच्च गोत्र कर्म बंध के कारण बनते हैं।

प्रश्न १० : अंतराय कर्म बंध के क्या कारण हैं?

उत्तर : अंतराय कर्म बंध के पाँच कारण हैं– दान, लाभ, भोग, उपभोग, वीर्य–इनमें बाधा पहुँचाना।

(क्रमशः)

उपासना

(भाग - एक)

❑ आचार्य महाश्रमण ❑

श्रावक श्री बहादुरमलजी भंडारी

मघवागणी ने भंडारीजी की प्रार्थना को स्वीकार किया और सं० १९४२ का चातुर्मास करने जोधपुर पधार गए। भंडारजी ने अपनी शारीरिक निर्बलता को उपेक्षित करते हुए पूरे तन-मन से उस अवसर का आध्यात्मिक लाभ उठाने का प्रयास किया। जिस उत्साह और आग्रह से उन्होंने चातुर्मास प्राप्त किया था, वैसा ही वह उनके धार्मिक सहयोग में काम भी लगा। भाद्रपद कृष्णा नवमी की रात्रि को अचानक उनके शरीर का तापमान बढ़ गया। उससे उन्हें शरीर में अत्यंत निर्बलता अनुभव होने लगी। साधुओं के स्थान पर जाकर दर्शन करने का मन होते हुए भी वे जाने की स्थिति में नहीं रहे। अंत में विवश होकर उन्होंने मघवागणी को दर्शन देने के लिए प्रार्थना करवाई। सूर्योदय होने के साथ ही मघवागणी उनके घर पधारे और दर्शन दिए। बस, वे उनके अंतिम दर्शन ही सिद्ध हुए। इधर मंगलपाठ सुनाकर, आचार्यश्री वापस पधारे और उधर उन्होंने प्राण त्याग दिए। लोगों ने कहा–'वे उत्कृष्ट भक्तिमान् श्रावक थे वैसा ही उन्हें अंतिम समय में गुरु-दर्शन का उत्कृष्ट संयोग भी प्राप्त हुआ।' सत्तर वर्ष के उस कर्मठ जीवन का अंतिम दिन सं० १९४२ भाद्रपद कृष्णा दशमी था।

श्रावक श्री रूपचंदजी सेठिया

सुजानगढ़-निवासी सुप्रसिद्ध श्रावक रूपचंदजी सेठिया का जीवनकाल सं० १९२३ ज्येष्ठ शुक्ला दशमी से सं० १९८३ फाल्गुन शुक्ला सप्तमी तक का था। वे अपने पिता रतनचंदजी के तीन पुत्रों में सबसे छोटे थे। उनका जीवन सुयोग्य श्रावक का जीवन था। वे अपने छोटे-बड़े सभी कार्यों में अधिक से अधिक अहिंसा का प्रयोग करते, यहाँ तक कि मानसिक हिंसा से भी वे यथासंभव बचते। एक धनी और शहर के प्रमुख व्यक्ति होते हुए भी उन्होंने अपना जीवन संयमशील बनाया। सप्तम आचार्य डालगणी की उन पर विशेष कृपा थी। उन्होंने जब अपने पीछे शासन का भार संभालने के लिए नियुक्ति करने की बात सोची, तब पहले श्रावक रूपचंदजी से विचार-विमर्श किया। अन्य किसी को जब अंदर जाने का निषेध होता था उस समय भी यदि रूपचंदजी आते तो उनके लिए निषेध नहीं रहता था। कारण यह था कि वे एक पूर्ण विश्वस्त और शासन-हितैषी श्रावक थे।

गृहस्थ होते हुए भी वे साधुवत् थे। लोग उन्हें 'गृहस्थ साधु' कहा करते थे। एक बार बीकानेर का कोई नया व्यक्ति आचार्यश्री के दर्शन करने के लिए आया। दर्शन कर लेने के पश्चात् उसने पास में बैठे हुए श्रीचंदजी गधैया से पूछा कि श्रीजी महाराज के दर्शन तो कर लिए हैं, अब तुम्हारे में जो एक 'गृहस्थ साधु' है, उसे दिखलाओ। गधैयाजी उसकी मनोकामना को तत्काल समझ गए। उन्होंने उसे श्रावक रूपचंदजी से मिलाया, जो कि गृहस्थ होने पर भी वस्तुतः साधु जीवन के अधिकाधिक निकट पहुँचने के लिए निरंतर प्रयत्नशील रहते थे।

श्रावक रूपचंदजी का समग्र जीवन एक त्यागमय जीवन की ज्वलंत कहानी था। उनके जीवन की छोटी-बड़ी हर क्रिया त्याग की प्रकाश धारा से नहाई हुई थी। बालवय से ही वे धर्मानुरागी थे। यद्यपि तत्कालीन प्रथा अनुसार उनका विवाह दस वर्ष की बाल्यावस्था में कर दिया गया था, फिर भी उसमें उनकी अत्यासक्ति कभी नहीं हुई। जब वे बत्तीस वर्ष की पूर्ण युवावस्था में थे तभी पति-पत्नी दोनों ने साधना के रूप में पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन प्रारंभ कर दिया। पाँच वर्षों तक लगातार साधना कर लेने के पश्चात् सं० १९६० में जब आचार्य डालगणी का चातुर्मास सुजानगढ़ में हुआ तब उनके पास प्रकट रूप में जीवनपर्यन्त के लिए पूर्ण ब्रह्मचर्य का संकल्प कर लिया।

चलने-फिरने तथा खाने-पीने से लेकर जीवन का हर व्यवहार संयमित था। हर कार्य में वे पूर्ण विवेक रखते। वे प्रायः नीची दृष्टि किए हुए देखकर चलते। शौच के लिए प्रायः बाहर अचित्त भूमि में जाते। लघुशंका की निवृत्ति भी अचित तथा सूखी भूमि देखकर करते। भोजन में जूठा नहीं छोड़ते। कोई कितना ही स्वादिष्ट पदार्थ क्यों न होता तथा कोई उसके लिए उनसे कितना ही आग्रह क्यों न करता, पर वे अपनी मात्रा से अधिक बिलकुल नहीं लेते। यदि वे स्वयं किसी को परोसते तो जताए बिना अधिक नहीं डालते।

(क्रमशः)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
29 मई - 4 जून, 2023

✦ *जिस संगठन में पारस्परिक व्यवहार मृदुता व हितैषितापूर्ण होता है, वह दीर्घजीवी बन जाता है।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

अक्षय तृतीया के विविध आयोजन

सिकंदराबाद

तेरापंथ सभा के आयोजकत्व में साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में अक्षय तृतीया पारणा महोत्सव का आयोजन संपन्न हुआ। कवाड़ीगुड़ा के 'हैबीटेट अलाइट' के विशाल प्रांगण में साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी ने कहा कि अक्षय तृतीया का दिन आनंद, शांति और शक्ति का त्योहार है। आदिनाथ भगवान ने प्रथम बार जनता को वीतराग दर्शन का उपदेश दिया। यह ऐतिहासिक त्योहार संपूर्ण जैन समाज को वरदान रूप में प्राप्त हुआ।

साध्वीश्री जी ने कहा कि हम भाग्यशाली हैं जिन्हें भिक्षुशासन, तेरापंथ मिला है। महातपस्वी, जीवन के आधार आचार्य महाश्रमण जी का सान्निध्य मिला। साध्वी ने कहा कि साध्वी सुदर्शनप्रभा जी एवं साध्वी चैतन्यप्रभा जी ने वर्षीतप सानंद संपन्न किया। वे साधना पथ पर निरंतर बढ़ती रहें। सभी तपस्वियों ने साहस के साथ वर्षीतप की साधना की है।

साध्वी सुदर्शनप्रभा जी एवं साध्वी चैतन्यप्रभा जी ने कहा कि गुरुशक्ति व्यक्ति को परम तक पहुँचाने वाली होती है। हमारी तपस्या में साध्वी मंगलप्रज्ञा जी की प्रेरणा विशेष सहयोगी बनी है। दोनों साध्वियों ने साध्वीश्री जी के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त किया। साध्वी सिद्धियशा जी ने वर्षीतप आराधिका साध्वी चैतन्यप्रभा जी एवं साध्वी सुदर्शनप्रभा जी का परिचय प्रस्तुत किया। साध्वी राजुलप्रभा जी ने कहा कि प्रकृति की विषम स्थितियों में भी साध्वीद्वय की तपः साधना सानंद चली, इन्होंने चढ़ते भावों के साथ लक्षित मंजिल को पा लिया।

साध्वीवृंद ने गीत का सामूहिक संगान किया। तेरापंथ सभा, सिकंदराबाद के अध्यक्ष बाबूलाल बैद, तेयुप के अध्यक्ष वीरेंद्र घोषल, टीपीएफ के अध्यक्ष पंकज संचेती व महिला मंडल की अध्यक्षा अनिता गिड़िया ने सभी तपस्वियों का अभिवादन एवं अनुमोदना की।

ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा झाँकी प्रस्तुत की गई। कार्यक्रम में अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। साध्वी सुदर्शनप्रभा जी एवं साध्वी चैतन्यप्रभा जी के ज्ञातिजनों ने तप-अनुमोदना स्वर प्रस्तुत किए।

साध्वी डॉ० शौर्यप्रभा जी ने कार्यक्रम का संचालन किया।

वाशी

साध्वी पंकजश्री जी के सान्निध्य में तप अनुमोदना का कार्यक्रम हुआ। साध्वी पंकजश्री जी के मुखारविंद से मंगलाचरण से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। तेमम सदस्य विनीता बाफना द्वारा मंगलाचरण हुआ। सभा अध्यक्ष विनोद बाफना, महिला मंडल संयोजिका इंदु बड़ाला ने तपस्वी भाई-बहनों का स्वागत और अनुमोदना की।

साध्वी पंकजश्री जी ने वर्षीतप की विशेषता के बारे में बताया। साध्वी ललिताश्री जी, साध्वी सम्यक्यशा जी ने तपस्वी की अनुमोदना की। वर्षीतप करने वाले गौतम लोढ़ा, अशोक बड़ोला, सुमन बाफना, कंचन श्रीश्रीमाल, मंजू खटेड़, मीना ओस्तवाल, बसंतादेवी संचेती, विमला आंचलिया, खुशबू श्रीश्रीमाल, पिंकी परमार का तेरापंथी सभा व तेयुप के तत्त्वावधान में गुरुदेव की फ्रेम व पचरंगी शॉल के द्वारा तेरापंथ समाज वाशी द्वारा अभिनंदन किया गया।

तेरापंथी सभा मंत्री अर्जुन सोनी ने तपस्वी बहन सुमन बाफना, उपासक रतन सियाल की अनुमोदना की तथा अपने विचार व्यक्त किए। साध्वी शारदाप्रभा जी ने मुक्तक द्वारा सभी तपस्वियों की अनुमोदना की। कार्यक्रम का संचालन साध्वी शारदाप्रभा जी ने किया। आभार ज्ञापन तेयुप अध्यक्ष महावीर सोनी ने किया।

अमरनगर, जोधपुर

अक्षय तृतीया महोत्सव का आयोजन तेरापंथ भवन, अमरनगर में किया गया। कार्यक्रम साध्वी प्रमोदश्री जी के सान्निध्य में आयोजित हुआ। जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभ ने शुद्ध दान को ग्रहण कर अपने १३ महीने के लगातार तपस्या का अक्षय तृतीया के दिन ही पारणा किया। उसी के उपलक्ष्य में जैन वर्षीतप आराधक १३ माह तक वर्षीतप की साधना की जाती है।

कार्यक्रम का शुभारंभ महिला मंडल व कन्या मंडल, सरदारपुरा के गीत संगान से हुआ। तेरापंथ सभा, सरदारपुरा के अध्यक्ष सुरेश जीरावला ने स्वागत उद्बोधन दिया। साध्वी विद्युतप्रभा जी, तेरापंथ महिला मंडल मंत्री चंद्रा जीरावला, भंवरलाल भंसाली, मुकेश मेहता ने वक्तव्य द्वारा सभी तपस्वियों का अभिनंदन किया।

साध्वीवृंद व तेयुप द्वारा गीतिका के संगान द्वारा तपस्वी साधु-साध्वियों व श्रावकों का अभिनंदन किया गया।

साध्वी कुंदनप्रभा जी ने तप का महत्त्व बताया। अपना प्रथम वर्षीतप कर रहे साध्वी मध्यस्थप्रभा जी ने बताया कि जीवन में किसी भी कार्य को करने के लिए 'संकल्प करना, अनुकूल वातावरण मिलना और संघर्षों में जड़ें मजबूत रखना' जरूरी है।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी के मध्यस्थप्रभा जी के प्रथम वर्षीतप के उपलक्ष्य में भेजे गए संदेश का वाचन महावीर ढेलड़िया ने किया।

साध्वी प्रांजलप्रभा जी ने कहा कि भगवान देव ने स्वस्थ समाज की स्थापना की। भगवान में अपने विवेक से यह जाना कि हर समस्या की जड़ अज्ञान है। इसी को ध्यान में रखकर जनमानस को असि, मसि, कृषि का ज्ञान दिया।

श्रावक-श्राविका समाज में पन्नालाल कागोत ने अपना छठा, तुलसी देवी ने अपना छठा, लीला देवी संचेती ने अपना चौथा, बाबूबाई ने अपना १३वाँ एवं ज्योति ने अपना प्रथम वर्षीतप इक्षुरस ग्रहण कर अपना पारणा किया।

कार्यक्रम के अंत में अपना दूसरा वर्षीतप पूर्ण करने वाले मुनि जयकुमार जी ने गीतिका एवं मंगलपाठ द्वारा कार्यक्रम का समापन किया।

मुनि मुदित कुमार जी ने एकाशन के वर्षीतप को पूर्ण किया। कार्यक्रम में बालोतरा, टापरा, कोरणा आदि स्थानों से श्रावक समाज की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन सभा उपाध्यक्ष विनय तातेड़ ने किया।

● तप अभिनंदन कार्यक्रम का आयोजन तेरापंथ भवन में साध्वी प्रमोदश्री जी के सान्निध्य में आयोजित हुआ। कार्यक्रम के संयोजक सभा, सरदारपुरा अध्यक्ष सुरेश जीरावला ने बताया कि यह कार्यक्रम जोधपुर शहर में विराजित मुनि जय कुमार जी के दूसरे वर्षीतप, साध्वी विजयप्रभा जी के १२वें वर्षीतप और साध्वी मध्यस्थप्रभा जी के प्रथम वर्षीतप की अनुमोदना स्वरूप आयोजित किया गया है।

अनुमोदना कार्यक्रम में मंगलाचरण साध्वी पार्श्वप्रभा जी द्वारा गीतिका द्वारा हुआ। साध्वीवृंद ने गीत का संगान किया। साध्वी रुचिप्रभा जी ने साध्वी आगमप्रभा जी द्वारा प्रेषित गीत का संगान किया। साध्वी गौतमप्रभा जी ने स्वरचित गीत का संगान किया।

साध्वी प्रमोदश्री जी ने कहा कि तपस्या करना दुष्कर है, कठिन साधना है। साध्वी विजयप्रभा जी ने और साध्वी मध्यस्थप्रभा जी ने वर्षीतप कर साहस का परिचय दिया है। आप दोनों ऐसे ही आगे बढ़ते रहो, आत्म-विकास करती रहो, यही मंगलकामना।

इस अवसर पर तेयुप, सरदारपुरा, महिला मंडल व मोनिका छाजेड़, स्नेहा छाजेड़ ने तप गीत से वर्षीतप आराधक की अनुमोदना की।

कोलार, कर्नाटक

कर्नाटक के कोलार नगर में मुनि दीप कुमार जी के सान्निध्य में अक्षय तृतीया पर्व पर वर्षीतप के पारणे हुए। तीन श्राविकाओं के वर्षीतप के पारणे हुए, जो विजयनगर-बैंगलुरु की प्रवासी हैं। सज्जन बाई सियाल, सुनीता पींचा, अनीषा बाबेल। कार्यक्रम तेरापंथी सभा, विजयनगर-बैंगलोर द्वारा आयोजित हुआ। जिसके प्रायोजक थे मनोहरलाल बाबेल परिवार।

कार्यक्रम में बैंगलोर के के०जी०एफ०, कोलार, मूलबागल के लोग अच्छी संख्या में उपस्थित थे।

मुनि दीप कुमार जी ने कहा कि अक्षय तृतीया का पर्व जैन धर्म में भगवान ऋषभ के साथ अभिन्नता से जुड़ा हुआ है। यह भगवान के तप का अद्भुत दिवस है। मुनिश्री ने कहा कि भगवान ऋषभ की तपस्या को आधार बनाकर वर्तमान में हजारों तपस्वी एकांतर वर्षीतप की साधना कर रहे हैं। मुनिश्री ने तीनों श्राविकाओं के तप की अनुमोदना की।

पाँच दिवसीय आवासीय संस्कार निर्माण शिविर

दिल्ली।

संस्था शिरोमणी जैन श्वेतांबर तेरापंथी महासभा के तत्त्वावधान एवं जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, दिल्ली के आयोजकीय दायित्व के साथ कन्याओं हेतु पाँच दिवसीय आवासीय 'संस्कार निर्माण शिविर' का आयोजन किया गया। समणी मलयप्रज्ञा जी एवं नीतिप्रज्ञा जी का सान्निध्य प्राप्त हुआ। सौभाग्यवश समणी मधुरप्रभा जी व समणी मननप्रज्ञा जी का भी सहज सान्निध्य प्राप्त हुआ। समणी जी के मंगलपाठ एवं उद्बोधन से शिविर का उद्घाटन हुआ।

उद्घाटन सत्र में दिल्ली सभा अध्यक्ष सुखराज सेठिया, महासभा से मनोनीत शिविर केंद्रीय संयोजक कैलाश डूंगरवाल, दिल्ली सभा द्वारा मनोनीत शिविर संयोजक अशोक बैद एवं गणमान्य सदस्य महासभा उपाध्यक्ष संजय खटेड़, महासभा आंचलिक संयोजक के०के० जैन, महासभा कार्यकारिणी सदस्य मन्नालाल बैद, रतन लाल जैन, मनफूल बोथरा, सज्जन गिड़िया, प्रवीण बैंगवानी, तेयुप अध्यक्ष विकास सुराणा सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं सदस्य उपस्थित थे।

लुधियाना, पंजाब से समागत ८ कन्याओं के साथ ४२ शिविरार्थियों ने अपनी उपस्थिति दर्ज की। सभी सत्रों में कन्याओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। समणी मलयप्रज्ञा जी ने अच्छा जीवन जीने की कला हेतु टिप्स बताए। साध्वी नीतिप्रज्ञा जी ने Digital Presentation द्वारा तनाव, क्रोध, विचार आदि पर कंटोल करने का परीक्षण दिया। समणी मधुरप्रज्ञा जी अपने विचार व्यक्त किए। के०सी० जैन, राजुल मणोत, सुनीता जैन व संस्कृति भंडारी ने वक्तव्य दिया।

विमल गुणेचा ने योग सत्र व आओ खेलें खेल बच्चों को पूरे दिन ऊर्जावान बनाए रखा। स्वस्थ जीवन जीने हेतु राज गुणेचा ने बच्चों को हस्त मुद्रा का ज्ञान कराया। इंदु जैन द्वारा लिए गए योग सत्र ने बच्चों का मन मोह लिया। पारस तातेड़, विजय सिंह बैद, बजरंग कुंडलिया, नवीन जैन, दीपिका नाहटा। ज्योति पगारिया, सुनीता तातेड़, प्रतिभा चोरड़िया सभी का श्रम रहा।

समापन सत्र में सभी कन्याओं ने अपने विचार अनुभव को वक्तव्य, कविता आदि विधाओं से अभिव्यक्त किया। शिविर के सार के संदर्भ में समणी मलयप्रज्ञा जी ने भाव व्यक्त किए।

'अटूट बंधन माँ और बेटी का' कार्यशाला का आयोजन

बीदासर।

बीदासर केंद्र व्यवस्थापिका साध्वी रचनाश्री जी के सान्निध्य में कन्या मंडल की कार्यशाला 'अटूट बंधन माँ और बेटी का' का आयोजन किया गया। इस अवसर पर साध्वीश्री जी ने कहा कि माँ वह होती है जो बच्चों को ममता देती है, अपनी संतान को विकास की ऊँचाई पर ले जाने का प्रयत्न करती है। और अपनी संतान को हर कठिनाई से दूर रखने का प्रयत्न करती है।

एक माँ अपनी संतान को तीन बातों का प्रशिक्षण देती है—इंद्रिय संयम का प्रशिक्षण, एकाग्रता का प्रशिक्षण और सहन करने का प्रशिक्षण। माँ अपनी संतान को संस्कार देती है तो संतान को भी उन संस्कारों को सुरक्षित रखने का प्रयत्न करना चाहिए। शासनमाता, जिसकी शीतल छाँव में सबके पाप, ताप और संतान का हरण होता है, उस शासनमाता की ममता संपूर्ण धर्मसंघ को प्राप्त हुई है। उनके दीप संस्कारों को हम आगे बढ़ाते रहें।

साध्वी लब्धियशा जी ने अलग-अलग प्रसंगों से बताया है कि माँ वह है जो संस्कार देती है और एक व्यक्ति का संपूर्ण विकास करती है। कन्या मंडल ने गीत की प्रस्तुति दी। गरिमा बोथरा, दिव्या बोथरा, अनिषा बैद ने अपने विचार व्यक्त किए। कन्या मंडल द्वारा आयोजित कॉलेज प्रतियोगिता में गरिमा बोथरा प्रथम, रिया दुगड़ द्वितीय और पूजा दुगड़ ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। प्रतियोगिता की निर्णायक रेनू बैंगानी थी। कार्यक्रम का संचालन रिया दुगड़ ने किया।

आचार्यश्री महाश्रमण जी के दीक्षा दिवस के आयोजन

दिल्ली

तेरापंथ धर्मसंघ के ११वें आचार्य युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी एक ज्योति पुरुष और अध्यात्म के शिखर हैं। आचार्य के दीक्षा के पचास वर्ष का अवसर पूरे धर्मसंघ के लिए उल्लास और धार्मिकता के संवर्द्धन की प्रेरणा का अवसर है। ये विचार शासनश्री साध्वी संघमित्रा जी ने अणुव्रत भवन में आयोजित कार्यक्रम में व्यक्त किए।

मंगलाचरण साध्वी समाधिप्रभा जी ने गुरु अभ्यर्थना के रूप में किया। इस अवसर पर शासनश्री साध्वी शीलप्रभा जी, साध्वी डॉ० सूरजयशा जी, साध्वी ओजस्वीप्रभा जी के वक्तव्य हुए। साध्वी समाधिप्रभा जी का भी वक्तव्य हुआ। श्रावक समाज की ओर से समाजभूषण मांगीलाल सेठिया, सभाध्यक्ष सुखराज सेठिया, तेमम अध्यक्षा मंजु जैन, तेयुप मंत्री अभिनंदन बैद, पुष्पा बैंगानी, तेमम मंत्री यशा बोथरा, कमला भंसाली, मंजू भूतोड़िया आदि ने आचार्यप्रवर की अभिवंदना में विचार रखे। महिला मंडल द्वारा तत्त्वज्ञान प्रशिक्षण केंद्र का शुभारंभ हुआ। तेयुप ने भी गुरु आराधना के संकल्प व्यक्त किए। ५१ महिलाओं द्वारा सामूहिक गीतिका की प्रस्तुति हुई।

इस अवसर पर साध्वीवृंद ने सामूहिक गीत भी प्रस्तुत किया। संचालन महामंत्री प्रमोद घोड़ावत ने किया। स्व० पुखराज डूंगरवाल स्मृति ग्रंथ का लोकार्पण प्रवीण डूंगरवाल द्वारा करवाया गया।

रोहिणी, दिल्ली

साध्वी डॉ० कुंदनरेखा जी के सान्निध्य में दीक्षा अमृत महोत्सव मनाया गया। इस अवसर पर तेरापंथी सभा अध्यक्ष विजय जैन, दिल्ली सभा के मंत्री संजीव जैन, मुख्य रूप से उपस्थित थे। साध्वीश्री जी ने कहा कि करुणा की मूरत है महाश्रमण, समता की सूरत है महाश्रमण, संयम अनुत्तर है उस महापुरुष का, गुणों की कीरत है प्रभु महाश्रमण।

आचार्यश्री महाश्रमण जी का व्यक्तित्व, कर्तृत्व और नेतृत्व विलक्षण है। साध्वी सौभाग्ययशा जी ने कहा कि आचार्यश्री महाश्रमण जी का इंद्रिय संयम, वाणी संयम, खाद्य संयम एवं उपशम कषाय अनुपम है। जो वर्तमान में कार्यक्रम का महात्मा बुद्ध की याद दिलाती है।

साध्वी कल्याणयशा जी ने कहा कि आचार्यश्री महाश्रमण जी की स्थितप्रज्ञता बेजोड़ है, हर कार्य में समय नियमन अनुपम है, उनकी दृष्टि और वाणी का संयम अनुत्तर है।

साध्वी कर्तव्ययशा जी ने कहा कि आचार्यश्री के व्यक्तित्व को किसी उपमा से उपमित नहीं किया जा सकता। विमला सुराणा, राजू राखेचा, ममता डागा तथा निर्मला बैद ने गीत का संगान किया। सुशीला पुगलिया ने महाश्रमण अष्टकम् द्वारा मंगलाचरण किया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी कल्याणयशा जी ने किया।

बीदासर

समाधि केंद्र व्यवस्थापिका साध्वी रचनाश्री जी के सान्निध्य में आचार्यश्री महाश्रमण जी का ५०वाँ दीक्षा दिवस 'दीक्षा कल्याण महोत्सव' के रूप में मनाया गया। शासनश्री साध्वी यशोमती जी ने कहा कि यदि कोई एक दिन भी शुद्ध दीक्षा का पालन करता है, वह अपना बड़ा कल्याण कर लेता है और आचार्यप्रवर ने ४६ वर्ष शुद्ध पालन करते हुए महान कल्याण अर्जित किया है।

साध्वी रचनाश्री जी ने कहा कि दीक्षा वह लेना चाहता है जो अंधकार से प्रकाश की ओर आना चाहता है, जो भोग में फँसी अपनी आत्मा को त्याग पथ पर लाना चाहता है। दीक्षा लेने वाले व्यक्ति के संग्रह वृत्ति छूटती है और वह अपनी आत्मा के प्रति अनुरागी बनकर वैरागी बन जाता है।

शासनश्री साध्वी अमितप्रभा जी ने कहा कि आचार्यश्री महाश्रमण जी का श्रम बेजोड़ है। उनके व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए उपस्थित जन मानस में दीक्षा की प्रेरणा दी। साध्वीवृंद ने गीत की प्रस्तुति दी। सभा की ओर से रवि सेखानी, अजित बैंगानी, महिला मंडल अध्यक्षा चंदा देवी गिड़िया, उपाध्यक्ष शिखा देवी बैद, ज्ञानशाला की ओर से अलका बांठिया, इवा संचेती ने अपने विचार व्यक्त किए। कन्या मंडल एवं महिला मंडल ने गीत प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी गीतार्थप्रभा जी ने किया।

अररिया कोर्ट

आचार्यश्री महाश्रमण जी का दीक्षा कल्याणक समारोह मुनि ज्ञानेंद्र कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ महिला मंडल की बहनों द्वारा मंगलाचरण से हुआ। सुनील हीरावत ने गीतिका, सभा उपाध्यक्ष सचिन दुगड़, तेयुप मंत्री उदित चोरड़िया, प्रदीप चोरड़िया, कन्या मंडल एवं ज्ञानशाला के छोटे-छोटे बच्चों द्वारा लघु नाटिका प्रस्तुत की गई। कार्यक्रम में अभातेयुप के पूर्व उपाध्यक्ष अमित नाहटा, सभा अध्यक्ष गुलाबबाग सुशील संचेती, सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं सदस्यों की उपस्थिति रहे। मुनि सुबोध कुमार जी एवं मुनि ज्ञानेंद्र कुमार जी ने अपना वक्तव्य दिया।

कार्यक्रम का धन्यवाद ज्ञापन सभा के मंत्री राजू दुधोड़िया ने किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि विमलेश कुमार जी स्वामी ने किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में सभा, अणुव्रत समिति, महिला मंडल, तेयुप तथा कन्या मंडल एवं ज्ञानशाला के बच्चों का सहयोग रहा।

सरदारपुरा

साध्वी कुंदनप्रभा जी के सान्निध्य में आचार्यश्री महाश्रमण जी का दीक्षा दिवस मनाया गया। महिला मंडल ने मंगलाचरण से कार्यक्रम की शुरुआत की। तेयुप अध्यक्ष महावीर चौधरी ने स्वागत भाषण दिया। साध्वी चारित्रप्रभा जी ने कहा कि आचार्यश्री कमल के फूल के तरह निर्मल, पवित्रत, कोमल, करुणाशील, आंतरिक सुंदरता के धनी हैं।

सभा, सरदारपुरा अध्यक्ष सुरेश जीरावला, महिला मंडल अध्यक्षा सरिता कांकरिया, किशोर मंडल संयोजक ऋषभ श्यामसुखा ने भावों की अभिव्यक्ति दी। साध्वी किरणयशा जी ने अपने भाव व्यक्त किए।

जगदीश धारीवाल ने गीत का संगान किया। साध्वी विद्युतप्रभा जी ने उद्गार व्यक्त किए।

कार्यक्रम का संचालन तेयुप मंत्री निर्मल छल्लाणी ने किया। इस अवसर पर सभा सरदारपुरा, तेयुप, किशोर मंडल और श्रावक समाज उपस्थित रहा।

राजाजीनगर

मुनि हिमांशु कुमार जी के सान्निध्य में आचार्यश्री महाश्रमण जी का ५०वाँ दीक्षा कल्याण महोत्सव तेयुप द्वारा आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत मुनिश्री द्वारा सामूहिक नमस्कार महामंत्र से हुई।

मुनि हिमांशु कुमार जी ने कहा कि वैराग्य के तीन कारण होते हैं—मोह-दुःख-समझ, आपश्री ने इन तीनों कारण पर विश्लेषण करते हुए आध्यात्मिक जीवन में समावेश करने की प्रेरणा प्रदान की।

मुनि दीप कुमार जी ने प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए गुरुदेव की सहजता एवं सहनशीलता के गुणों का वर्णन करते हुए गुरुदेव के अनेक जीवन दृष्टांत पर प्रकाश डाला। मुनि हेमंत कुमार जी ने समय प्रबंधन पर अपने विचार व्यक्त किए। मुनि काव्य कुमार जी ने बालक मोहन से मुनि मुदित, मुदित से महाश्रमण और महाश्रमण से युवाचार्य महाश्रमण तथा आचार्य महाश्रमण की यात्रा पर विश्लेषण किया।

ईरोड

आचार्यश्री महाश्रमण जी का ५०वाँ दीक्षा कल्याण पर साध्वी डॉ० गवेषणाश्री जी ने कहा कि महाश्रमण वह होता है, जिसका दिल करुणा से भीगा होता है। ऋजुता से रंगा हुआ है और तन संयम में सधा हुआ है। प्रास्य विद्याओं के मर्मज्ञ हैं, समयज्ञ हैं, आगमज्ञ हैं। मन की पवित्रता है, विचारों की निर्मलता है। आपकी इंदिय संयम, दृष्टि संयम, वचन संयम की साधना पराकाष्ठा तक पहुँच गई है। जो आपके आभामंडल में आ जाता है, वो आपका ही बन जाता है। इसके पीछे कारण है तेजस्वी संन्यास का प्रभाव।

साध्वी मयंकप्रभा जी ने कहा कि आचार निष्ठा, गुरु निष्ठा, संघनिष्ठा, मर्यादा निष्ठा का नाम है आचार्यश्री महाश्रमण। आचार्यश्री महाश्रमण जी की मोहन से महाश्रमण की यात्रा का घटक तत्त्व है, पुरुषार्थ, श्रमनिष्ठा

साध्वी दक्षप्रभा जी ने गीतिका प्रस्तुत की। साध्वी मेरुप्रभा जी ने संचालन किया। अमिता बैद, पूनम दुगड़ के मंगलाचरण से कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। स्वागत भाषण सभा अध्यक्ष सुरेंद्र भंडारी ने किया।

तेयुप अध्यक्ष सुभाष एवं टीम द्वारा सामूहिक गीत प्रस्तुत किया गया। तेमम, ईरोड अध्यक्षा सुनीता भंडारी ने विचार रखे। आभार ज्ञापन सभा के मंत्री दुलीचंद पारख ने किया।

साउथ हावड़ा

आचार्यश्री महाश्रमण जी का ५०वाँ दीक्षा दिवस तेयुप के तत्त्वावधान में मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में मनाया गया। इस अवसर पर कोलकाता महानगर की शाखा परिषदें—दक्षिण हावड़ा, उत्तर हावड़ा, दक्षिण कोलकाता, लिलुआ, हिंदमोटर, टॉलीगंज, बेहाला, कलकत्ता मेन, मध्य, उत्तर कोलकाता आदि विशेष रूप से उपस्थित थी।

इस अवसर पर मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि आचार्यश्री के दीक्षा दिवस को युवा दिवस के रूप में मनाया जाता है। युवा समाज की तस्वीर है, तकदीर है, युवा समाज की रीढ़ व ऊर्जा है। युवा श्रमशील, विचारशील, सहनशील, कर्मशील, चारित्रशील बने। मुनि परमानंद जी ने कहा कि आचार्यश्री महाश्रमण दृढ़-संकल्प, पूर्ण समर्पण व प्रबल पुरुषार्थ के धनी हैं।

इस अवसर पर मुनि कुणाल कुमार जी ने गीत का संगान किया। कार्यक्रम का शुभारंभ दीक्षार्थी मुमुक्षु अंकिता चोरड़िया, मुमुक्षु संजना पारख द्वारा महाश्रमण अष्टकम् के संगान से हुआ।

स्वागत भाषण तेयुप के अध्यक्ष वीरेंद्र बोहरा ने प्रस्तुत किया। इस अवसर पर तेरापंथी सभा, साउथ हावड़ा के अध्यक्ष लक्ष्मीपत बाफना ने विचार व्यक्त किए। आभार ज्ञापन तेयुप मंत्री गगन बैद ने किया एवं संचालन मुनि परमानंद जी ने किया।

अणुविभा, जयपुर

आचार्यश्री महाश्रमण दीक्षा कल्याण महोत्सव का आयोजन शासन गौरव बहुश्रुत साध्वी कनकश्री जी के सान्निध्य में अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप द्वारा किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ महाश्रमण अष्टकम् के संगान से हुआ।

शासनश्री साध्वी कनकश्री जी ने कहा कि युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी का दीक्षा महोत्सव मौन संदेश देता है कि 'युग जागे, सद्गुण संपन्न बने व ऊर्जावान बने'। इसके लिए जरूरी है संतों का संपर्क। युवा दिवस पर प्रसारित परिपत्र का विशेष संकल्पित होकर साधना करें तो अभ्यास के द्वारा हमारे भीतर भी सद्गुणों का विकास होगा और तेरापंथ समाज शक्तिशाली बन सकेगा।

साध्वी मधुलता जी ने युवा दिवस पर आचार्यप्रवर के वैराग्य की पृष्ठभूमि को सरस शैली में प्रस्तुत किया। तेरापंथी सभा के अध्यक्ष हिम्मत डोसी, तेयुप के अध्यक्ष सुरेंद्र नाहटा, महिला मंडल-शहर की अध्यक्षा निर्मला सुराणा व बीना भांडिया ने वक्तव्य द्वारा अपने उद्गार व्यक्त किए।

साध्वीवृंद ने सामूहिक गीतिका प्रस्तुत की। महिला मंडल व कन्या मंडल ने सामूहिक गीतिका द्वारा सुमधुर स्वरों में प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम का संचालन संयोजक सौरभ जैन ने किया और आभार ज्ञापन गौतम बरड़िया ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
29 मई - 4 जून, 2023

✦ *एक अच्छा संकल्प अनेक समस्याओं से बचाने वाला हो सकता है। अपेक्षा है कि उसका निष्ठा के साथ पालन हो। वह तुम्हारा अभिन्न मित्र व सच्चा मित्र होगा।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

त्रिदिवसीय जीवन विज्ञान प्रशिक्षण शिविर

अध्यात्म साधना केंद्र, दिल्ली।

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी, अणुव्रत समिति ट्रस्ट, दिल्ली अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास व सहयोगी संस्था जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित जीवन विज्ञान प्रशिक्षण शिविर तेरापंथ भवन, महरौली आयोजित हुआ। जिसमें शिक्षा विभाग, दिल्ली के अधिकारीगण उपस्थित हुए।

उद्घाटन सत्र का प्रारंभ अणुव्रत समिति ट्रस्ट के सदस्यों द्वारा अणुव्रत गीत के संगान व शिक्षा निदेशक हिमांशु गुप्ता द्वारा दीप प्रज्ज्वलन से हुआ।

अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास के मुख्य प्रबंध न्यासी के०सी० जैन ने कहा कि शिक्षा जीवन की अधिष्ठात्री है। शिक्षा केवल पुस्तकीय ज्ञान ही नहीं, बल्कि सद्संस्कारों के जागरण का माध्यम है। शिक्षा के क्षेत्र में बदलाव के लिए जीवन विज्ञान वरदान है।

दिल्ली के शिक्षा निदेशक हिमांशु गुप्ता ने कहा कि जीवन विज्ञान विधायक भावों का निर्माण करता है। उन्होंने स्वस्थ, संतुलित व सर्वांगीण व्यक्तित्व के विकास के लिए जीवन विज्ञान को जीवन का अनिवार्य हिस्सा बताते हुए कहा कि इसे सभी विद्यालय में लागू होना चाहिए।

दक्षिण दिल्ली के उप-शिक्षा निदेशक डॉ० अशोक त्यागी ने कहा कि आज संस्कारों का ह्रास होता जा रहा है। पाश्चात्य संस्कृति के कारण व्यक्ति त्याग, संयम व भारत की प्राचीन संस्कृति को भूलता जा रहा है। शिक्षा के क्षेत्र में नैतिक मूल्यों व विद्यालय के विकास की दृष्टि से जीवन विज्ञान बहुत पसंद उपयोगी है एवं इसे जीवन की शैली के रूप में स्वीकार किया जा सकता है।

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के महामंत्री भीखमचंद सुराणा, अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी की उच्च शिक्षा प्रभारी डॉ० हंसा संचेती, जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, दिल्ली के अध्यक्ष सुखराज सेठिया के वक्तव्य हुए।

आभार ज्ञापन अणुव्रत समिति ट्रस्ट, दिल्ली के अध्यक्ष शांतिलाल पटावरी ने किया। कार्यक्रम संयोजन जीवन विज्ञान दिल्ली प्रभारी बाबूलाल दुगड़ ने किया।

उद्घाटन सत्र में संयुक्त शिक्षा निदेशक नाहर सिंह, एस०सी०ई०आर०टी० की निदेशक रीता सिंह, डी०आर०ई०टी० के प्राचार्य अनिल सिंह, नोडल ऑफिसर व कोऑर्डिनेटर श्यामसुंदर सिंह, हैरिटेज स्कूल प्रमुख नमित जैन, अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के कार्यसमिति सदस्य सुरेंद्र नाहटा, अणुव्रत समिति ट्रस्ट के वरिष्ठ उपाध्यक्ष कमल बैंगानी, मंत्री धनपत नाहटा, संगठन मंत्री मनोज बरमेचा, कल्पना सेठिया, राज गुनेचा, विमल गुनेचा सहित अनेक गणमान्यजन उपस्थित थे।

प्रथम प्रशिक्षण सत्र में जीवन विज्ञान के प्रायोजक व सैद्धांतिक प्रशिक्षण दिए गए। प्रार्थना सभा में जीवन विज्ञान के सैद्धांतिक व प्रायोगिक पक्ष का प्रशिक्षण हनुमान शर्मा ने कराया। शरीर विज्ञान के संदर्भ में प्रशिक्षक अजय शर्मा ने जानकारी दी। कायोत्सर्ग के सैद्धांतिक व प्रायोगिक पक्ष को रमेश कांडपाल ने बताया। जीवन विज्ञान सिद्धांत व जीवन विज्ञान की जानकारी वरिष्ठ प्रशिक्षक राकेश खटेड़ ने दी। अनुप्रेक्षा के प्रयोग रीना गोयल ने करवाया एवं प्राकृतिक चिकित्सा व जीवन शैली पर डॉ० काजल भट्ट ने जानकारी दी।

प्रशिक्षण कार्यक्रम का द्वितीय सत्र प्रारंभ हुआ। जिसमें प्रशिक्षक हनुमान शर्मा ने प्रार्थना सभा में जीवन विज्ञान के अंतर्गत आसन, प्राणायाम, कायोत्सर्ग, ज्ञान केंद्र, प्रेक्षा संकल्प आदि पर प्रकाश डाला एवं प्रयोग कराए। आसन प्राणायाम सत्र योग प्रशिक्षक धमेन्द्र व रितिका ने लिया। साधना केंद्र के वरिष्ठ शिक्षक अजय शर्मा ने शरीर विज्ञान के श्वास, पाचन, नाडी व ग्रंथि तंत्र पर प्रकाश डाला व शरीर के एक-एक अवयव क्या कार्य करते हैं अवगत कराया। रीना गोयल ने अनुप्रेक्षा के प्रयोग कराए। अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान की डॉ० सुमन लुथरा ने आहार सिद्धांत पर वक्तव्य दिया। राज गुनेचा ने मुद्रा विज्ञान पर प्रकाश डाला।

पूर्व की भांति इस सत्र में सारे पाठ्यक्रम रहे। सभी ने दो दिनों के प्रशिक्षण की पुनरावृत्ति की व अपनी जिज्ञासा प्रस्तुत की।

प्रशिक्षण सत्र के बाद समापन समारोह हुआ। इस सत्र में अणुव्रत न्यास के प्रबंध न्यासी के०सी० जैन, डॉ० अनिल तेवलिया एवं नोडल ऑफिसर व कोऑडिटनेटर श्यामसुंदर सिंह ने अपने विचार रखे। जीवन विज्ञान की उपयोगिता के माध्यम से कैसे सर्वांगीण विकास हो सकता है उसके बारे में अवगत कराया।

तीन दिवसीय शिविर में उपनिदेशक, प्रधानाचार्य व अध्यापकगणों (१०२) ने भाग लिया। समापन कार्यक्रम का संयोजन जीवन विज्ञान, दिल्ली के प्रभारी बाबूलाल दुगड़ ने किया। रमेश कांडपाल ने धन्यवाद ज्ञापित किया। समारोह में अणुव्रत महासमिति के पूर्व अध्यक्ष बाबूलाल गोलछा, तेरापंथी सभा, दिल्ली के सुशील कुहाड़ एवं मुकेश सेठिया आदि गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति रही।

अमृत महोत्सव पर विशेष

अर्हम्

● **साध्वी शीलयशा** ●

अक्षयकोष महाश्रमण, तीर्थंकर समउपकारी।
तीर्थंकर समउपकारी, जय नेमा नंदन मनहारी हो।।

मंत्री मुनिवर मुखारविंद स्यूं, छोटी वय में दीक्षा।
झूमर कुल रो नाम दीपायो,
हुई खूब परीक्षा।
अभिनंदन मय गणिराज है,
भैक्षव शासन का ताज है।
वीतराग सी प्रतिमूर्ति भव बंधन क्षयकारी हो।।

तेजस्वी ललाट विराट व्यक्तित्व प्रेरणा संबल,
कलाकृतियाँ तुलसी जैसी उपकृत गण नंदनवन,
आभामंडल मुस्कान है अनुकंपा पहचान है।
करी यात्रा नेपाल भूटान पहुँचे कन्याकुमारी हो।।

युग प्रधान युग चिंतक प्रहरी युग के एक सहारे।
देवा सुर नर अमृत महोत्सव आए द्वार तुम्हारे।
प्यारो विश्व सितारों है गण उजियारो है।
युग युग जीओ चिंतामणि मनवांछित फले हमारी हो।।

लय : स्वामी जी थारी साधना

आचार्यश्री का ६२वाँ जन्मोत्सव

होसकोटे।

आचार्यश्री महाश्रमण जी के ६२वें जन्म दिवस का आयोजन मुनि दीप कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथी सभा होसकोटे के द्वारा किया गया। जिसमें अच्छी संख्या में होसकोटे, विजयनगर-बैंगलोर, हुंसूर तमिलनाडु के श्रावक-श्राविका उपस्थित थे। मुनि दीप कुमार जी ने कहा कि आचार्यश्री महाश्रमण जी साम्ययोगी हैं। उनकी साम्यता ने मुझे सबसे अधिक प्रभावित किया है। चाहे अनुकूल स्थिति हो चाहे प्रतिकूल स्थिति हो। हर स्थिति में आचार्यप्रवर सम रहते हैं।

मुनिश्री ने आगे कहा कि हम सौभाग्यशाली हैं कि ऐसे गुरु हमें प्राप्त हुए जिनकी अनुशासना में हम साधना कर रहे हैं। आप चिरायुस्ता को प्राप्त हों। मुनि काव्य कुमार जी ने कहा कि आचार्यश्री महाश्रमण जी में ऋजुता, मृदुता, निष्प्रदता है। आचार्यश्री को प्रारंभ से ही अनुशासन प्रिय रहा है।

कार्यक्रम का शुभारंभ होसकोटे महिलाओं के मंगलाचरण के द्वारा किया गया। तेरापंथ सभा होसकोटे अध्यक्ष इंदरचंद धोका ने पधारे हुए सभी का स्वागत किया। तेरापंथ सभा विजयनगर-बैंगलोर के अध्यक्ष प्रकाश गांधी, महिला मंडल अध्यक्षा प्रेम भंसाली, मंत्री सुमित्रा बरड़िया, तेयुप मंत्री राकेश पोकरणा, अणुविभा के संगठन मंत्री राजेश चावत आदि अनेक पदाधिकारीगण एवं गणमान्यजन उपस्थित थे। आभार ज्ञापन ललित चोरड़िया ने किया। कार्यक्रम का संचालन महासभा के क्षेत्रीय प्रभारी धर्मीचंद धोका ने किया।

पैंसठिया का देखिए चमत्कार कीजिए तीर्थंकर प्रभुवर की जय-जयकार

नाथद्वारा।

गणपत मेहता के प्रवास में साध्वी डॉ० परमयशा जी के सान्निध्य में पैंसठिया अनुष्ठान के कार्यक्रम का समायोजन हुआ।

डॉ० साध्वी परमयशा जी ने कहा कि क्या आप उच्च ग्रहों का योग चाहते हैं, क्या आप तनावमुक्त जीवन जीना चाहते हैं, क्या आप सफलता की उड़ान चाहते हैं, क्या आप समग्र अनुकूलता चाहते हैं तो 'पैंसठिया यंत्र का करें संगान, जिसमें है तीर्थंकर प्रभु का गुणगान, स्तुति स्मृति से जीवन बनता है महान, एक दिन बन जाए भक्त से भगवान। ६५ की संख्या से पैंसठिया यंत्र प्रख्यात है। इससे शासन सेवी देवी-देवता प्रसन्न होते हैं। कोई भी जाप कम से कम ४३ दिन तक करना चाहिए। दुनिया कहती है पास में पैसा रखो बुरे वक्त में काम आता है। हम अपने भगवान पर भरोसा करें तो बुरा वक्त ही नहीं आएगा। पैंसठिया एक ऐसा यंत्र है, छंद है, जो शांति समाधि, सुयश की दौलत देता है। यह स्तोत्र पारसमणि की तरह है जो हर प्राणी को पारस ज्यों पवित्र बनाता है।

साध्वीवृंद द्वारा गीत का संगान किया गया। अनुष्ठान में श्रावक-श्राविकाओं ने उल्लास और उमंग से भाग लिया।

आचार्यश्री महाश्रमण दीक्षा कल्याण महोत्सव का आयोजन

जयपुर।

आचार्यश्री महाश्रमण दीक्षा कल्याण महोत्सव का आयोजन शासनश्री साध्वी कनकश्री जी के सान्निध्य में अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप द्वारा अणुविभा जयपुर केंद्र में किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र से हुआ। तेरापंथी सभा के अध्यक्ष हिम्मत डोसी, तेयुप, जयपुर के अध्यक्ष सुरेंद्र नाहटा व महिला मंडल की अध्यक्षा निर्मला सुराणा व बीना भांडिया ने वक्तव्य से अपने उद्गार व्यक्त किए। चारित्रात्माओं ने सामूहिक गीतिका का संगान कर आचार्यप्रवर के प्रति मंगलकामना व्यक्त की। साध्वी मधुलता जी ने युवा दिवस पर आचार्यप्रवर के दीक्षा की पृष्ठभूमि को सरस शैली में प्रस्तुत किया।

साध्वीश्री जी ने प्रेरणा पाथेय में कहा कि युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के दीक्षा दिवस को आज धर्मसंघ युवा दिवस के रूप में मना रहा है। साधु-संतों की संगत करने से ज्ञान की प्राप्ति और जीवनरूपी यात्रा सिद्धि की ओर गतिमान होती है। अपने आपको जानना सबसे बड़ा ज्ञान होता है। आचार्यश्री के छोटे-छोटे वाक्य मर्म-स्पर्शी एवं सीधे हृदय को छू जाते हैं। हम अपनी इच्छाओं पर संयम रखेंगे तो दुःख अपने आप स्वतः सीमित हो जाएगा।

कार्यक्रम का संचालन संयोजक सौरभ जैन ने किया और आभार ज्ञापन गौतम बरड़िया ने किया। तेयुप, जयपुर के पदाधिकारियों, कार्यसमिति सदस्यों सहित अनेकों गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

महाश्रमणोस्तु मंगलम

साउथ हावड़ा

आचार्यश्री महाश्रमण दीक्षा कल्याण महोत्सव एवं युवा दिवस के उपलक्ष्य में अभातेयुप के तत्त्वावधान में महाश्रमणोस्तु मंगलम २:० का आयोजन मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में तेयुप साउथ हावड़ा द्वारा किया गया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि अभातेयुप के सहमंत्री अनंत बागरेचा रहे। कार्यक्रम के मुख्य संगायक श्रद्धानिष्ठ संगायक कमल सेठिया रहे। कार्यक्रम में कोलकाता, सबरबर्न, हावड़ा क्षेत्र की परिषदों की सहभागिता सराहनीय रही।

इस अवसर पर मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि जैन धर्म के प्रभावक आचार्यों में एक स्वर्णिम नाम है—आचार्यश्री महाश्रमणजी। वे शांति के देवता, पुरुषार्थ के मंत्रदाता, महामनस्वी, महातपस्वी, महाप्रतापी महापुरुष हैं। वे आत्मभक्ति, गुरुभक्ति, श्रुत भक्ति व संघ भक्ति के उत्कृष्ट पर्याय हैं।

कार्यक्रम का आयोजन साउथ हावड़ा, तेयुप की गुरुभक्ति का अनमोल उदाहरण है। इस अवसर पर मुनि कुणाल कुमार जी ने सुमधुर गीत का संगान किया। मुख्य गायक कलाकार श्रद्धानिष्ठ संगायक कमल सेठिया ने गीतों का संगान कर महाश्रमणोस्तु २:० कार्यक्रम को नई ऊँचाइयाँ प्रदान करते हुए सभी श्रोताओं को भक्तिरस में डुबकियाँ लगाने को मजबूर कर दिया।

कार्यक्रम का शुभारंभ मुनि जिनेश कुमार जी के द्वारा नमस्कार महामंत्रोच्चार से हुआ। विजयगीत का संगान तेयुप साउथ हावड़ा, साउथ कोलकाता, पूर्वांचल ने किया। तेयुप साउथ हावड़ा के अध्यक्ष बिरेंद्र बोहरा ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। अभातेयुप के सहमंत्री अनंत बागरेचा ने अपने विचार व्यक्त किए। तेरापंथी सभा के अध्यक्ष लक्ष्मीपत बाफना, तेमम की अध्यक्षा चंद्रकांता पुगलिया ने अपने विचार व्यक्त किए।

आभार ज्ञापन तेयुप के सहमंत्री राहुल दुगड़ ने किया। कार्यक्रम का संचालन तेयुप मंत्री गगन बैद ने किया। कार्यक्रम में अच्छी संख्या में श्रद्धालुओं ने हिस्सा लिया।

अहमदाबाद

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप द्वारा युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के ५०वें दीक्षा दिवस पर महाश्रमणोस्तु मंगलम २:० भव्य भक्ति संध्या का आयोजन तेरापंथ भवन में किया गया।

मुनि डॉ० मदन कुमार जी एवं मुनि सिद्धार्थ कुमार जी के सान्निध्य में आयोजित महाश्रमणोस्तु मंगलम २:० की शुरुआत मुनि डॉ० मदन कुमार जी द्वारा नमस्कार महामंत्र के साथ एवं धर्मसंघ की प्रख्यात चार सुमधुर गीत गाए। मुनि सिद्धार्थ कुमार जी ने एक विशेष गीत गाया। कार्यक्रम का संचालन आनंद बोथरा ने किया।

स्वागत वक्तव्य तेयुप, अहमदाबाद के मंत्री दिलीप भंसाली ने दिया। सुप्रसिद्ध गायिका अभिलाषा बांठिया का परिचय आनंद बोथरा ने दिया एवं मंच पर अभिलाषा को आमंत्रित किया। अभिलाषा बांठिया ने अपने मधुर कंठ से सुमधुर संघ गीतों की प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम के प्रायोजक अरुण बैद एवं धनेश छाजेड़ का सम्मान एवं अभिलाषा बांठिया का सम्मान तेयुप द्वारा किया गया। अंत में मुनि सिद्धार्थ कुमार जी ने मंगल पाठ सुनाया। भक्ति संध्या को सफल बनाने में सभी पदाधिकारी एवं संयोजक आनंद बोथरा, जागृत दुगड़, अरिहंत बाफना का विशेष श्रम रहा।

भीलवाड़ा

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप संस्था, भीलवाड़ा द्वारा महाश्रमणोस्तु मंगलम २:० कार्यक्रम का आयोजन मुनि पारस कुमार जी स्वामी के सान्निध्य में किया गया। इस धम्म जागरण में अनेक सम्माननीय गायकों ने अपने सुमधुर गीतों के साथ उपस्थित धर्मसंघ को मंत्रमुग्ध कर दिया।

कार्यक्रम की शुरुआत मंगलाचरण के साथ की। मंत्री राजू कर्णावट ने सभी कलाकारों एवं अतिथियों का स्वागत एवं अभिनंदन किया। इस कार्यक्रम का संचालन संजय भानावत ने किया।

अंत में कोषाध्यक्ष सुरेश चोरड़िया ने उपस्थित धर्मसंघ, सम्माननीय गायक कलाकार, मंच संचालन एवं सभी अतिथियों का तेरापंथ युवक परिषद की पूरी टीम को साधुवाद एवं आभार व्यक्त किया।

इस अवसर पर तेयुप अध्यक्ष कमलेश सिरोहिया, कोषाध्यक्ष सुरेश चोरड़िया, उपाध्यक्ष प्रदीप आंचलिया, टीपीएफ के अध्यक्ष करण सिंह संघवी, तेयुप सदस्य एवं महिला मंडल और बड़ी संख्या में संस्था के पदाधिकारी एवं सदस्यगण उपस्थित थे।

सम्यक् दर्शन कार्यशाला का दीक्षांत समारोह

अहमदाबाद।

शासनश्री साध्वी रामकुमारी जी के सान्निध्य में सम्यक् दर्शन कार्यशाला का दीक्षांत समारोह का आयोजन तेरापंथ भवन, कांकरिया में किया गया। शासनश्री साध्वी रामकुमारी जी ने नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम की शुरुआत की, तत्पश्चात मंगलाचरण उपाध्यक्ष प्रदीप बागरेचा, राकेश बैद और सुनील बागरेचा ने किया।

तेयुप, अहमदाबाद के अध्यक्ष अरविंद संकलेचा ने अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए कहा कि इस कार्यशाला को सफल बनाने में साध्वीश्री की प्रेरणा एवं संयोजक, सह-संयोजक व सहयोगी का विशेष सहयोग रहा। कार्यशाला के प्रायोजक सरला देवी स्व० नेमीचंद मालू परिवार एवं मोहिनी देवी महावीरचंद भंसाली परिवार का भी विशेष आभार ज्ञापन किया। कांकरिया-मणिनगर सभा के अध्यक्ष वीरेंद्र मुनोत और मंत्री नलिन दुगड़ का भी आभार ज्ञापन किया।

अरविंद ने कहा कि बहुत हर्ष की अनुभूति हो रही है कि सम्यक् दर्शन कार्यशाला-२०२२ में अहमदाबाद का कुल उत्तीर्ण परिणाम ९७:६४ प्रतिशत रहा। कुल ३८१ परीक्षार्थियों में से ३७२ उत्तीर्ण हुए।

समण संसकृति संकाय द्वारा कार्यशाला एवं परीक्षा संचालन के लिए तेयुप, अहमदाबाद को प्रथम स्थान दिया गया। अभातेयुप के राष्ट्रीय अधिवेशन में भी सम्यक् दर्शन कार्यशाला के लिए तेयुप, अहमदाबाद को प्रथम स्थान दिया गया।

पूरे भारत और विदेश के ४०१३ परीक्षार्थियों में से अहमदाबाद की मंजु सांखला को आठवाँ स्थान प्राप्त हुआ। अहमदाबाद से २०० में से २०० अंक प्राप्त करने वाले कुल ६ परीक्षार्थी हैं।

साध्वी आत्मप्रभा जी ने कहा कि तेयुप, अहमदाबाद जो संकल्प लेता है उसे दृढ़ निश्चय के साथ पूर्ण करता है एवं सभी संभागी ने विशेष रूप से बहुत मेहनत की और शानदार परिणाम प्राप्त किया। साध्वीश्री जी ने सभी को इस कार्यशाला में सम्मिलित होने पर बधाई देते हुए आध्यात्मिक शुभकामनाएँ प्रेषित की।

सभी उत्तीर्ण परीक्षार्थियों को सर्टिफिकेट देकर सम्मानित किया गया। तेयुप, अहमदाबाद के पूर्व अध्यक्ष ललित बैंगवानी ने अपने विचार रखे। कार्यक्रम में श्रमण संस्कृति संकाय उत्तर गुजरात के प्रभारी संजीव छाजेड़ तथा आंचलिक संयोजक दिनेश धूपिया ने भी अपने विचार रखे।

तेयुप के सहमंत्री जय छाजेड़ एवं कार्यसमिति सदस्यों के साथ आंचलिक संयोजिका लाड देवी बाफना की विशेष उपस्थिति रही। आभार ज्ञापन दिनेश धूपिया ने किया। कार्यक्रम का संचालन सुनील बागरेचा ने किया।

ज्ञानशाला शुभारंभ

साउथ हावड़ा।

मुनि जिनेश कुमार जी की प्रेरणा से साउथ हावड़ा में ज्ञानशाला का शुभारंभ हुआ। संगम ज्ञानशाला में वृहद कोलकाता एवं दक्षिण बंगाल स्तरीय आंचलिक संयोजिका डॉ० प्रेमलता बाई चोरड़िया अपनीटीम के साथ पधारी। आंचलिक कार्य समिति सदस्य मालचंद भंसाली, साउथ कोलकाता क्षेत्रीय संयोजक प्रकाश दुगड़, उपनगरीय क्षेत्रीय संयोजिका मंजु घोड़ावत, स्थानीय सभा के सह-संयोजिका पंकज दुगड़, क्षेत्रीय सह-संयोजिका मनीषा भंसाली सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं गणमान्यजन उपस्थित थे।

मनीषा भंसाली ने कार्यक्रम का संयोजन किया। अभिभावक विकास बरमेचा ने कहा कि अगर इंसान अपना बुढ़ापा अच्छा चाहता है तो बच्चों को ज्ञानशाला में जरूर भेजे। संयोजक मालचंद भंसाली और आंचलिक संयोजिका प्रेम बाई ने वक्तव्य के द्वारा ज्ञानार्थियों को प्रेरणा दी।

सभी उपस्थित पदाधिकारियों ने अपने-अपने वक्तव्य द्वारा ज्ञानार्थियों को प्रेरणा दी एवं संगम ज्ञानशाला को मंगलकामनाएँ प्रेषित की। संगम ज्ञानशाला की मुख्य प्रशिक्षिका सरिता गिडिया ने सभी का स्वागत एवं आभार ज्ञापन किया।

दीक्षा दिवस का आयोजन

कोटा।

तेरापंथी सभा के तत्त्वावधान में गुलाबबाड़ी स्थित तेरापंथ भवन में आचार्यश्री महाश्रमण जी का ५०वाँ दीक्षा दिवस शासनश्री साध्वी धनश्री जी के सान्निध्य में मनाया गया। शासनश्री साध्वीश्री जी ने कहा कि आचार्यश्री महाश्रमणजी का जीवन संपूर्ण युवाओं के लिए आदर्श एवं प्रेरणा स्रोत है। वो धैर्य, संयम, अनुशासन एवं संकल्प के पुरोधा हैं, उनके जीवन में हमें खाद्य संयम, इंद्रिय संयम, वाणी संयम आदि की शिक्षा लेनी चाहिए। इससे पूर्व साध्वीवृंद द्वारा महाश्रमण अष्टकम द्वारा मंगलाचरण किया गया।

साध्वी शीलयशा जी, साध्वी सलीलयशा जी, साध्वी विदितप्रभा जी, अणुव्रत समिति अध्यक्ष अशोक कुमार दुगड़, मंत्री भूपेंद्र बरड़िया, तेयुप अध्यक्ष आनंद दुगड़ ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। सभा संगठन मंत्री मनोज जैन, तेयुप मंत्री कमलेश जैन ने पधारे हुए आगंतुकों का आभार व्यक्त किया। महिला मंडल व तेयुप द्वारा गीतिका का संगान किया गया। कार्यक्रम का संचालन सभा मंत्री धर्मचंद जैन ने किया।

अक्षय तृतीया कार्यक्रम का आयोजन

कानपुर।

मुनि आनंद कुमार जी 'कालू' के सान्निध्य में अक्षय तृतीया कार्यक्रम मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुनिश्री के महामंत्रोच्चार से हुआ। मुनि आनंद कुमार जी ने कहा कि अक्षय तृतीया का पर्व तप और दान का है। भगवान ऋषभदेव का प्रथम आहार इसी दिन उनके प्रपौत्र श्रेयांस कुमार के हाथों से हुआ था। तेरापंथ महिला मंडल ने मंगलाचरण की प्रस्तुति की। सभा अध्यक्ष धनराज सुराणा ने गुरुदेव और मुनिवृंद के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए मुनिवृंद के आगामी चातुर्मास स्थल वीरगंज से आए हुए श्रावकों का स्वागत अभिनंदन किया।

पूरनचंद सुराणा, गणेशमल जम्मड़, मीत भूतोड़िया, महिला मंडल अध्यक्षा शालीनी बुच्चा, तेयुप, प्रभा मालू, प्रियंका भूतोड़िया, ऋतु जैन आदि ने अपने वक्तव्य और गीतों के माध्यम से अपनी प्रस्तुति दी

मुनि विकास कुमार जी ने गीत का संगान किया। बीरगंज, नेपाल से आए हुए श्रावकों ने भी अपनी गीतिका की प्रस्तुति दी। वीरगंज सभा अध्यक्ष निर्मल सिंघी ने मुनिवृंद की यात्रा के प्रति मंगलकामना की। मुनि आनंद कुमार जी ने मुनि विकास कुमार जी के १२वें वर्षीतप का पारणा करवाया तथा उनके न्यातिलों की आज्ञा तथा गुरुदेव के आशीर्वाद से मुनि विकास कुमार जी को १३वें वर्षीतप का पच्चखान करवाया। बंसीलाल बोथरा ने पूज्यप्रवर का इस अवसर पर प्राप्त संदेश का वाचन किया। मुनि विकास कुमार जी के न्यातिले रूपचंद श्रीमाल, मुनि आनंद कुमार जी के न्यातिले सुरभि बैद ने अपनी प्रस्तुति दी।

कानपुर दिगंबर, स्थानकवासी, मूर्तिपूजक समाज के पदाधिकारी भी इस अवसर पर उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन कानपुर तेरापंथी सभा मंत्री संदीप जम्मड़ ने किया। बीरगंज सभा अध्यक्ष निर्मल सिंघी, मुनि विकास कुमार जी के न्यातिले रूपचंद श्रीमाल तथा वीरगंज तेमम की ओर से रेखा बैद को कानपुर तेरापंथ सभा ने साहित्य तथा उपर्णा ओढाकर स्वागत किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
29 मई - 4 जून, 2023

✦ *अपना दर्द मिटाने का प्रयास करने वाले व्यक्तियों से संस्कार भरा पड़ा है। ऐसे कितने व्यक्ति हैं, जो दूसरों का दर्द मिटाने के लिए कृतसंकल्प होते हैं।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

आचार्यश्री महाश्रमणजी के ५०वें दीक्षा कल्याण महोत्सव के आयोजन

मदुरैवाइल (चेन्नई)

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के ५०वें दीक्षा कल्याण महोत्सव पर साध्वी लावण्यश्री जी के सान्निध्य में कार्यक्रम का आयोजन हुआ।

कार्यक्रम में साध्वी लावण्यश्री जी ने कहा कि महान पुरुष के जीवन को शब्दों की माला में पिरोना वास्तव में ही बड़ा दुरुह काम है। कहाँ से उनके जीवन की विशेषताओं की शुरुआत करें और कहाँ पूर्ण करें। उनका व्यक्तित्व, कर्तृत्व, नेतृत्व, वर्चस्व अमाप्य होता है, अवर्णनीय होता है। बचपन से लेकर अब तक जिन्होंने अपने आत्मनिष्ठा, संघनिष्ठा, अध्यात्मनिष्ठा, गुरुनिष्ठा, आज्ञानिष्ठा से ऊँचाइयों के आकाश को छुआ है। उपलब्धियाँ उनके चरण चुमती है।

साध्वी सिद्धांतश्री जी ने कहा कि मैं पुण्य पुत्र गुरुदेव की अभिवंदना कमल कुंज एवं गुलाबनिकुंज के रूप में करती हूँ।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि रहे प्रिंसिपल सेक्रेटरी तमिलनाडु सरकार एंड मैनेजिंग डायरेक्टर सुदीप जैन, तमिलनाडु राज्य अल्पसंख्यक आयोग सदस्य भामाशाह प्यारेलाल पीतलिया, जैन महासंघ के अध्यक्ष राजकुमार जैन, राजेश जैन, महासंघ के पूर्वाध्यक्ष पन्नालाल जैन उपस्थित थे।

चेन्नई सभाध्यक्ष उगमराज सांड, तेयुप अध्यक्ष विकास कोठारी, महिला मंडल अध्यक्षा पुष्पा हिरण, मदुरैवाइल अध्यक्ष किशनलाल संचेती, दिनेश भागड़ा, तनिष्का संचेती एवं मोती संचेती ने अपने भाव प्रस्तुत किए।

तेयुप द्वारा गीत की प्रस्तुति हुई। मदुरैवाइल कन्या मंडल एवं महिला मंडल ने गीत की प्रस्तुति दी। अणुव्रत महासमिति उपाध्यक्ष माला कातरेला ने विचार व्यक्त किए।

कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीश्री जी के द्वारा महामंत्रोच्चार एवं ॐ के आकार में 'ॐ ह्रीं श्री महाश्रमणगुरवे नमः' के जप अनुष्ठान से हुआ।

महिला मंडल एवं कन्या मंडल द्वारा अतीत के उजले पृष्ठ में वीडियो प्ले किया गया। संचेती परिवार की ओर से गणमान्य अतिथियों का सम्मान किया गया। जिसका संचालन तनिष्का संचेती ने एवं मुख्य कार्यक्रम का संचालन साध्वी दर्शितप्रभा जी ने किया।

दलखोला

आचार्यश्री महाश्रमण जी का जन्मोत्सव, पदाभिषेक एवं ५०वाँ दीक्षा दिवस संयम अभिवंदना के रूप में मुनि प्रशांत कुमार जी के सान्निध्य में आयोजित हुआ। मुनि प्रशांत कुमार जी ने कहा कि आचार्यश्री महाश्रमण जी का व्यक्तित्व अपने आपमें एक विशिष्ट व्यक्तित्व है। उनके जीवन में कितने-कितने गुणों का समावेश हुआ है। कोई भी व्यक्ति गुणों के आधार पर आगे बढ़ता है। आचार्यश्री महाश्रमण जी जीवन के प्रारंभ में ही गुणों का विकास करते रहें। उनके जीवन में विनम्रता का गुण एक विशेष गुण रहा है।

आचार्यश्री महाश्रमण जी ने दूर देश के साथ विदेश की धरती नेपाल और भूटान की यात्रा करके एक कीर्तिमान स्थापित किया। जन-जन को अहिंसा यात्रा के माध्यम से मानवता से जुड़ने का अवसर मिला। आचार्यश्री महाश्रमण जी के भीतर प्रारंभ से ही अप्रमाद का भाव एवं साधुत्व के प्रति जागरूकता का भाव रहा है। समभाव की साधना की प्रेरणा स्वतः मिल रही है। श्रावक समाज अध्यात्म की दिशा में विकास करता रहे। परिवार में समाज में समन्वय का भाव बढ़ता रहे।

मुनि कुमुद कुमार जी ने कहा कि अनेक जन्मों से जीव संसार में भ्रमण करता आ रहा है। जन्म कहाँ लेना व्यक्ति के हाथ में नहीं परंतु जीवन कैसे जीना व्यक्ति पर निर्भर करता है। सहज, सरल, सौम्य, मधुरभाषी साधक पुरुष का नाम है आचार्यश्री महाश्रमण जी। आचार्यश्री महाश्रमण स्वयं अपनी आत्मा का कल्याण करते हुए धर्मसंघ में आत्मकल्याण के विकास का अनुचिंतन कर रहे हैं।

कार्यक्रम का शुभारंभ कन्या मंडल के मंगलाचरण से हुआ। सभा अध्यक्ष नौरंग नाहर ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। महासभा प्रभारी सुजान सेठिया, बिहार-नेपाल सभा के मंत्री विरेंद्र संचेती, महासभा उपाध्यक्ष नेमीचंद बैद, उत्तर-बंगाल ज्ञानशाला आंचलिक प्रभारी लक्ष्मीपत गोलछा, बिहार ज्ञानशाला प्रभारी धर्मचंद श्रीमाल, नगर पालिका चेयरमैन स्वदेश सरकार, ज्ञानशाला दलखोला, तेयुप, तेममं, बसंत बागरेचा इस्लामपुर सभा के मंत्री, किशनगंज महिला मंडल अध्यक्षा संतोष, गुलाबबाग सभा अध्यक्ष सुशील संचेती ने वक्तव्य, गीत, नाटक के द्वारा प्रस्तुति दी। आभार ज्ञापन सभा मंत्री पवन दुधेड़िया ने किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि कुमुद कुमार जी ने किया।

चारित्रात्माओं का त्रिवेणी संगम व आध्यात्मिक मिलन

ठाणे।

साध्वी डॉ० पीयूषप्रभा जी एवं साध्वीवृंद कानपुर से ठाणे १३०० किलोमीटर की सुदीर्घ यात्रा ५ महीने और १३ दिन का लंबा विहार कर ठाणे भवन पधारे। अत्र विराजित शासनश्री साध्वी चंदनबाला जी एवं साध्वी राकेश कुमारी जी ने साध्वीवृंद का बड़े आत्मीय भाव से स्वागत किया। नारे की गूँज के साथ भवन में प्रवेश और मधुर, भावपूर्ण गीतिका से साध्वीवृंद ने आगंतुक साध्वियों का स्वागत किया।

कार्यक्रम के प्रारंभ में ठाणे सभाध्यक्ष रमेश सोनी ने स्वागत किया। मधुर गीतिका महिला मंडल ने प्रस्तुत की। शासनश्री साध्वी चंदनबाला जी ने अपने अनुभवों के पिटारे से आगंतुक साध्वियों से जुड़े कई संस्मरण बताए। साध्वी राकेश कुमारी जी ने कहा कि साध्वी पीयूषप्रभा जी सद्गुणी, विनम्र और व्यवहारकुशल हैं। आचार, विचार, मर्यादा, संगठन, एकता ये सभी तेरापंथ धर्मसंघ के मूलाधार हैं। तेरापंथ समाज ठाणे की प्रशंसा की।

साध्वी वर्धमानश्री जी एवं साध्वीवृंद ने स्वागत किया। साध्वी पीयूषप्रभा जी ने कहा कि बड़ों की सन्निधि वर्षों के बाद प्राप्त हुई है और लंबे अंतराल के पश्चात गुरुदेव के दर्शन प्राप्त होंगे, यह भी दिवास्वप्न की पूर्ति के संकेत हैं। साध्वी दीप्तियशा जी ने कहा कि महासमुद्र में मिलने से पहले ठाणे भवन में सरिताओं का संगम हो रहा है। ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं ने गीत प्रेषित किया। स्वागत के स्वर तेयुप, ठाणे सिटी अध्यक्ष अविनाश गोगड़, ठाणे सेंट्रल संयोजिका प्रिया मूथा, रश्मि कोठारी एवं पृथक विहार सेवा के संयोजक विमल सोनी ने प्रेषित किए। कार्यक्रम में अनेक गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति रही। संचालन ठाणे सिटी महिला मंडल अध्यक्षा अनिता धारीवाल ने किया।

आचार्यश्री महाश्रमण जी का ६२वाँ जन्मोत्सव

शाहदरा, दिल्ली।

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी का ६२वाँ जन्मोत्सव ओसवाल समाज भवन में उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी के सान्निध्य में मनाया गया। मुनिश्री की विशेष प्रेरणा से ६२ जोड़ों की सामूहिक सामायिक के साथ गुरुवर को मंगलकामनाएँ समर्पित करने का लक्ष्य रखा गया था, लेकिन उपस्थिति १२४ से भी ज्यादा जोड़ों ने सामायिक का बेला करके गुरुदेव को आध्यात्मिक मंगलकामनाएँ प्रेषित की।

उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी ने आचार्यप्रवर के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए कहा कि गुरुदेव की उनके ऊपर हमेशा विशेष कृपा रही है एवं उन्होंने भी सदैव गुरु आज्ञा की पालना को विशेष महत्त्व दिया है।

मुनि नमी कुमार जी ने कहा कि हमें गुरु के प्रति सदैव सजग रहना चाहिए एवं उनके इंगित की आराधना करनी चाहिए। मुनि अमन कुमार जी ने कहा कि हम गुरु के गुणों को अंश मात्र भी अगर धारण कर लें तो अपना जीवन सफल बना सकते हैं।

दिल्ली सभा के उपाध्यक्ष बाबूलाल दुगड़, गांधीनगर सभा के अध्यक्ष कमल गांधी, शाहदरा सभा के मंत्री सुरेश सेठिया, ओसवाल समाज के अध्यक्ष आनंद बुच्चा, गाजियाबाद सभा से डॉ० कुसुम लुणिया, तेयुप से अरविंद सिंघी, टीपीएफ से दीपक कुचेरिया, अणुव्रत समिति से शांतिलाल पटावरी, दिल्ली ज्ञानशाला से अशोक बैद आदि ने अपनी शुभकामनाएँ समर्पित की। किशोर मंडल ने अपनी गीतिका से गुरुदेव को अपनी अभिवंदना प्रेषित की।

जैन परंपरा का सर्वमान्य स्त्रोत है भक्तामर

भीनासर।

समस्याओं के समाधान में मंत्र साधना की अहम भूमिका है। मंत्र साधना से मनोबल सुदृढ़ होता है, जिससे परिस्थितियाँ उसे प्रभावित नहीं कर सकती। भक्तामर एक ऐसा ही स्त्रोत है, जो मंत्रों से गर्भित है यह आदिनाथ भगवान की स्तुति में रचा गया एक चामत्कारिक स्तोत्र है जो जैन परंपरा का सर्वमान्य स्तोत्र है। इसके जप व पाठ से अनेक प्रकार के चमत्कार घटित हुए हैं। ये विचार मुनि चैतन्य कुमार 'अमन' ने भीनासर स्थित बोथरा भवन में भक्तामर-अनुष्ठान का प्रयोग कराते हुए धर्मसभा में कहे।

इस अवसर पर मुनि अमन कुमार जी ने भक्तामर के अतिरिक्त उवसग्गहर स्तोत्र, लोगस्स का पाठ तथा अनेक छोटे-बड़े मंत्रों के प्रयोग करवाए। समस्याओं की वैतरणी को पार करने के लिए मंत्र रूपी नौका का बहुत सहारा मिलता है। मंत्र जप के सहारे से व्यक्ति अनेक बाधाओं को पार कर सकता है। अतः भक्तामर जैसा शक्तिशाली स्तोत्र का प्रतिदिन पाठ करने से व्यक्ति मुक्ति की दिशा में अग्रसर हो सकता है।

इस अनुष्ठान में इंद्रचंद बोथरा, नरेंद्र सिरोहिया, मनोज बोथरा, जयचंद सुराणा, प्रकाश छाजेड़, अशोक बोथरा, विजय सिंह बोथरा आदि अनेक भाई-बहनें उपस्थित थे। अनुष्ठान का समापन महावीर स्तुति से हुआ।

महाश्रमणोस्तु मंगलम

हैदराबाद।

आचार्यश्री महाश्रमण जी के ५०वें दीक्षा महोत्सव के अवसर पर साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में तेयुप द्वारा महास्मणोस्तु मंगलम भक्ति संध्या का आयोजन डीवी कॉलोनी स्थित जैन तेरापंथ भवन में किया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत साध्वीश्री जी द्वारा नमस्कार महामंत्र के उच्चारण व तेयुप द्वारा मंगलाचरण से हुई। तेयुप अध्यक्ष विरेंद्र घोषल ने हरियाणा से पधारे हुए प्रमुख गायक कलाकार अमित सिंघी ने आचार्यश्री महाश्रमण के भजनों से अपनी प्रस्तुति दी।

साध्वीवृंद की सामूहिक गीतिका, साध्वी सुदर्शनप्रभा जी, साध्वी राजुलप्रज्ञा जी, नवनीत छाजेड़, नवीन लुनिया, रौनक नाहटा, ममता दुगड़ आदि ने अपनी प्रस्तुति दी।

साध्वी मंगलप्रज्ञा जी ने अपना उद्बोधन दिया। भक्ति संध्या में तेयुप के पूर्व अध्यक्ष लक्ष्मीपत बैद, राजेंद्र बोथरा, मुकेश सुराणा, नवीनत छाजेड़ सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं गणमान्यजन उपस्थित थे।

कार्यक्रम का संचालन सहमंत्री नवीन लूनिया ने किया। उन्होंने साध्वीवृंद के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की तथा सभी का आभार ज्ञापन किया।

महाश्रमणोस्तु मंगलम के कार्यक्रम

सरदारशहर

तेयुप, सरदारशहर द्वारा अभातेयुप के तत्त्वावधान में गुरुदेव के ५०वें दीक्षा दिवस के उपलक्ष्य में महाश्रमणोस्तु मंगलम २:० भव्य भक्ति संध्या का आयोजन तेरापंथ भवन में किया गया।

शासनश्री साध्वी चांदकुमारी जी के सान्निध्य में कार्यक्रम आयोजित किया गया। साध्वी सुदर्शनाश्री जी ने नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। उपस्थित साध्वीवृंद ने सामूहिक गीतिका का संगान किया।

तेयुप एवं किशोर मंडल द्वारा सामूहिक गीतिका का संगान किया गया। महिला मंडल एवं कन्या मंडल ने भी अपनी सामूहिक मधुर प्रस्तुति दी।

महाश्रमणोस्तु मंगलम २:० में आमंत्रित गायिका अभिलाषा बांठिया द्वारा अनेकों सुमधुर प्रस्तुतियाँ दी गई। सरदारशहर के दो युवा भाई शुभम बरड़िया एवं चंद्रप्रकाश सेठिया पिछले साल सरगम के फाइनलिस्ट रहे हुए दोनों ने भी सामूहिक प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम के प्रायोजक पूनमचंद नमन जम्मड़ (सरदारशहर-कोलकाता) परिवार रहा। आमंत्रित कलाकार एवं प्रायोजक परिवार का मोमेंटो द्वारा अभिनंदन किया गया।

कार्यक्रम का लाइव प्रसारण जेटीएन के ऑफिशल पेज पर किया गया, जिसे दस हजार से ज्यादा लोगों ने देखा।

कार्यक्रम में तेरापंथी सभा, महिला मंडल एवं श्रावक समाज की अच्छी उपस्थिति रही। तेयुप मंत्री धीरज छाजेड़ ने कार्यक्रम का संचालन किया एवं आभार ज्ञापन किया।

फरीदाबाद

तेयुप, फरीदाबाद द्वारा आचार्यश्री महाश्रमण जी के दीक्षा दिवस के उपलक्ष्य में युवा दिवस को स्वरांजली के रूप में महाश्रमणोसतु मंगलम २:० का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के मंगल मंत्रोच्चार से सभा अध्यक्ष गुलाब बैद द्वारा किया गया।

तत्पश्चात तेयुप साथियों द्वारा विजय गीत का संगान किया गया। सभी श्रावक समाज, गायक एवं उनके साथ आए संगीतकारों का व पूरे श्रावक समाज का स्वागत तेयुप, फरीदाबाद अध्यक्ष विवेक बैद द्वारा किया गया।

निवर्तमान अध्यक्ष एवं अभातेयुप कार्यसमिति सदस्य राजेश जैन द्वारा नित नई ऊँचाइयों को छूती अभातेयुप के द्वारा युवा दिवस पर अखिल भारतीय स्तर पर होने वाले सभी आयोजनों व कार्यों के बारे में बताया।

कार्यक्रम में दिल्ली के सुप्रसिद्ध संघगायक ललित श्यामसुखा, राहुल बैद व संघगायिका चारू बांठिया और संगीतकारों को गणमान्य श्रावक-श्राविकाओं तथा तेयुप सदस्यों द्वारा सम्मानित किया गया।

इस कार्यक्रम के संयोजक बने संकेत लुनिया व अभय भंसाली। मंच संचालन भरत बेंगवानी एवं जितेंद्र लुनिया द्वारा किया गया। आभार ज्ञापन आलोक सुराना ने किया।

जैन विद्या पाठ्यक्रम प्रेरणा संगोष्ठी का आयोजन

सिकंदराबाद।

तेरापंथ सभा के तत्त्वावधान में साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में जैन विश्व भारती लाडनूं द्वारा आयोजित जैन विद्या पाठ्यक्रम में जुड़ने हेतु विशेष संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर साध्वीश्री जी ने कहा कि जैन विद्या जिंदगी का दर्शन है। हम इस शाश्वत सत्य को जानें, भगवान महावीर का दर्शन उपासना नहीं आचरण प्रधान है। इस जीवन-दर्शन को जीवन का अंग बनाएँ।

साध्वीश्री जी ने उपस्थित श्रावक-श्राविका समाज एवं जैन विद्या पाठ्यक्रम से जुड़े पदाधिकारियों को प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि हर व्यक्ति सर्वे करे कि ज्ञान-चेतना का स्तर क्या है। मात्र संख्या बढ़ाना हमारा ध्येय नहीं है। जैन विद्या की गहन साधना नहीं होनी चाहिए, हर व्यक्ति जैन विद्या अध्ययन के प्रति जागरूक बने, ठोस अध्ययन करे।

हैदराबाद केंद्रीय व्यवस्थापिका सीमा नाहर ने स्वागत संभाषण प्रस्तुत किया। पदाधिकारी बहनों ने संगान किया। तेरापंथ सभा के उपाध्यक्ष लक्ष्मीपति बैद ने कहा कि इस महत्त्वपूर्ण कार्य हेतु जागरूकता अपेक्षित है।

कार्यक्रम में पदाधिकारीगण, सदस्य एवं गणमान्यजनों की उपस्थिति रही। राजेंद्र बोथरा ने साध्वीश्री जी के प्रति आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन सुमन सेठिया ने किया। यशोदा कोठारी ने आभार व्यक्त किया।

संस्कार निर्माण शिविर का आयोजन

उत्तर हावड़ा।

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथ सभा के तत्त्वावधान में एक दिवसीय संस्कार निर्माण शिविर का आयोजन तेरापंथ भवन में हुआ। जिसमें १०५ शिविरार्थियों ने भाग लिया।

इस अवसर पर मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि विद्यार्थी किसी भी समाज या राष्ट्र की नींव होते हैं, पृष्ठभूमि होते हैं। समाज व राष्ट्र का उत्थान उनके विकास पर निर्भर करता है। इसीलिए कहा गया है आज का विद्यार्थी ही कल का बादशाह है और देश का कर्णधार है। विद्यार्थियों को सुशिक्षित सुसंस्कारी बनाने का मतलब है पूरे देश को सुशिक्षित व सुसंस्कारी बनाना।

मुनिश्री ने आगे कहा कि जीवन का परम लक्ष्य है—मोक्ष। मोक्ष साधन की उज्ज्वलता से प्राप्त होता है। साधना की गहराई तक पहुँचाने का मार्ग है—धर्म। मुनि परमानंद जी ने कहा कि धन-वैभव से भी अधिक मूल्य सुसंस्कारों की संपदा का होता है।

कार्यक्रम का शुभारंभ ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों के मंगल गीत से हुआ। स्वागत भाषण तेरापंथ सभा के अध्यक्ष राकेश संचेती ने दिया। ज्ञानशाला आंचलिक संयोजिका डॉ० प्रेमलता चोरड़िया ने विचार रखे। ज्ञानशाला के बच्चों ने प्रस्तुति दी। शिविर में विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताएँ हुई। तेरापंथ सभा द्वारा प्रतियोगियों को पुरस्कृत किया गया। शिविर में प्रशिक्षिकाओं का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। मुनि जिनेश कुमार जी व मुनि परमानंद जी ने प्रशिक्षण दिया।

✦ मध्यम कोटि की कामना वाला व्यक्ति दूसरों के अनिष्ट की इच्छा तो नहीं करता, किंतु अपने लिए भौतिक आकांक्षा करता है। लोक व्यवहार में इसे बुरा भी नहीं माना जाता।

– आचार्यश्री महाश्रमण

भक्ति संध्या का आयोजन

अमराईवाडी।

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप अमराईवाड़ी ओढ़व द्वारा भक्ति संध्या का आयोजन तेरापंथ भवन में किया गया। जिसमें सभा, तेयुप, महिला मंडल के सदस्यों एवं ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा दो-दो पद्य गीतिका एवं महाश्रमण लिखित गीतों द्वारा अपनी प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम में गरिमामय उपस्थिति उपासिका मंजु गेलड़ा एवं सभा के मंत्री गणपत हिरण एवं तेयुप, महिला मंडल, ज्ञानशाला के बच्चों की रही। कार्यक्रम का संचालन अल्पेश हिरण ने किया। आभार ज्ञापन दिनेश टुकलिया ने किया।

पारिवारिक सार-संभाल

औरंगाबाद।

तेयुप द्वारा छत्रपती संभाजीनगर द्वारा तेयुप के साथियों का पारिवारिक सार-संभाल कार्यक्रम चलाया। इसी कड़ी में अभातेयुप की क्षेत्रीय प्रभारी एवं तेयुप के मंत्री अंकुर लुणिया एवं सहमंत्री रूपेश आबड़ ने आकाश बांठिया, अभिजीत चंडालिया, ऋषभ सिपानी, आदित्य सिपाली, गौरव नाहटा और सौरव नाहटा के घर जाकर उनसे और उनके परिवार के सारे सदस्यों के साथ विस्तृत वार्तालाप किया।

इस पारिवारिक सार-संभाल के दौरान तेयुप की नई टीशर्ट वितरण, डिजिटली डाटा कलेक्शन, आध्यात्मिक एवं पारिवारिक चर्चा इत्यादि किया गया।

आगामी अक्षय तृतीया पर गुरुदेव के आगमन स्वरूप तैयारियों पर भी चर्चा की गई। तेयुप द्वारा सभी परिवारों को सहयोग के लिए आभार प्रकट किया।

तेयुप द्वारा सेवा कार्य

साउथ कोलकाता।

अभातेयुप के निर्देशानुसार, तेयुप द्वारा साउथ कोलकाता ने विभिन्न पुलिस अधिकारियों से मिलकर उन्हें अत्यंत आवश्यक फर्स्ट ऐड किट बॉक्स दिए।

इस कार्यक्रम के लिए तेयुप साउथ कोलकाता के अध्यक्ष रोहित दुगड़, उपाध्यक्ष आनंद मणोत व कार्यकारिणी सदस्य जिनेंद्र सुराना ने कस्बा पुलिस थाना, पार्क सर्कस पुलिस थाना एवं भवानिपुर पुलिस थाना के वरिष्ठ अधिकारी से मिल उन्हें ये अति आवश्यक मेडिकल किट सौंपी। सभी पुलिस अधिकारियों ने इस कार्य की सराहना की।

श्रद्धावर्धक जाप अनुष्ठान कार्यक्रम का आयोजन

अमराईवाडी।

तेयुप, अमराईवाडी ओढव द्वारा युवा दिवस के उपलक्ष्य में श्रद्धावर्धक जाप अनुष्ठान कार्यक्रम का आयोजन तेरापंथ भवन में किया गया। कार्यक्रम के संयोजक एवं सह-संयोजक सुनील चिप्पड़, मयंक गेलड़ा और तेयुप सदस्य किरण दुगड़, कैलाश रांका, कपिल सिंघवी, दीपक सिंघवी, विमल मेहता, अल्पेश हिरण सहित अनेक गणमान्यजनों की उपस्थिति रही।

जीवन में अहिंसा धर्म का पालन...

(पृष्ठ १६ का शेष)

जीव जीता है या मरता है, वह उसके आयुष्य बल से है। हिंसा तीन प्रकार की होती है, आरम्भजा, प्रतिरोधजा और संकल्पजा। आरम्भजा व प्रतिरोधजा हिंसा तो अपेक्षित है, पर संकल्पजा हिंसा न हो। संकल्पपूर्वक किसी प्राणी की हिंसा नहीं की जानी चाहिए।

साधु तो महाव्रती होते हैं। वे अहिंसा मूर्ति, दयामूर्ति होते हैं। गृहस्थ भी एक सीमा तक हिंसा से बचने का प्रयास करें। साधु तो क्षमामूर्ति है, सहन करें। कोई गालियाँ भी दे तो शांति में रहें, यह एक प्रसंग से समझाया कि गणियों से गुमड़े नहीं होते हैं। गुस्सा न करें। साधु अहिंसा को न छोड़ें, जुबान पर लगाम रखें। हम जीवन में अहिंसा-धर्म पालन का प्रयास करते रहें।

पूज्यप्रवर के स्वागत में गंगावत परिवार से रमेश कुमार जी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
29 मई - 4 जून, 2023

✦ *अचिन्तित बात कहनी नहीं चाहिए और सुचिन्तित बात पर डटकर रहना चाहिए।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

इहलोक व परलोक दोनों के लिए हितकारी श्रमण धर्म : आचार्यश्री महाश्रमण

धर्मपुर, वलसाड (गुजरात)
१८ मई, २०२३

आत्म-साधना के सजग प्रहरी आचार्यश्री महाश्रमण जी का श्रीमद्राजचंद्र मिशन का दूसरे दिन के प्रवास पर राकेश भाई ने प्रातः परम पूज्य व धवल सेना को विशाल आश्रम का अवलोकन करवाया। बड़ा ही सुंदर, रमणीय और प्राकृतिक छटाओं से निर्मित है, यह आश्रम।

पूज्यप्रवर द्वारा नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से मुख्य प्रवचन कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। परम पावन ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि दसवें आलियं आगम के एक श्लोक में बताया गया है कि श्रमण धर्म एक ऐसा मार्ग है, जिसके द्वारा इहलोक हित तो होता ही है, परलोक हित भी होता है और सुगति की प्राप्ति भी होती है।

भगवान महावीर के शासन में चार तीर्थ हैं—साधु-साध्वी, श्रावक और श्राविका। आचार्य भिक्षु के साहित्य में आया है कि साधु और श्रावक दोनों रत्नों की माला है, किंतु एक बड़ी माला है, दूसरी छोटी माला है। श्रावक में जो त्याग-व्रत है, उस अपेक्षा से वो रत्नों की माला है। सांसारिक कार्यों की अपेक्षा से नहीं।

शास्त्रों में बताया गया है कि श्रमण धर्म की जानकारी किससे लें? यूँ तो ज्ञानी से जानकारी मिल सकती है, पर यहाँ बताया गया है कि जो बहुश्रुत साधु है, उनकी पर्युपासना करें, प्रश्न करें और अर्थ का निश्चय करें। श्रामण्य प्राप्त होना बहुत बड़ी उपलब्धि होती है। उसके सामने गृहस्थों के पास कितनी ही संपति हो, वह तुच्छ है। श्रामण्य तो हमारे आगे के मार्ग को भी प्रशस्त करने वाला बन सकेगा।

साधु को पहले सामायिक चारित्र ग्रहण कराया जाता है। बाद में बड़ी दीक्षा के रूप में छेदोपस्थापनीय चारित्र ग्रहण कराया जाता है। यथाख्यात चरित्र तो बड़ी ऊँची चीज है, वह वर्तमान में उपलब्ध नहीं है। चारित्र के लिए सम्यक् ज्ञान जरूरी है। सम्यक्त्व के बिना चारित्र टिक नहीं सकता। बहुश्रुत से ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। प्रश्न करने से ज्ञान का विकास हो सकता है। विद्यार्थी जिज्ञासु है, तो अध्यापक को और खोजने का अवसर मिल सकता है। बहुश्रुत से श्रामण्य की जानकारी करने से हमारे में श्रामण्य का भाव आ सकता है, हम मोक्ष मार्ग की ओर अग्रसर हो सकते हैं।

आज जेष्ठ कृष्णा चतुर्दशी है, हर चतुर्दशी को मर्यादाओं का वाचन होता है। मर्यादा महोत्सव तो वर्ष में एक बार माघ शुक्ला सप्तमी को आता है। चार बातें हैं—आचार, विचार, मर्यादा और प्रेरणा। पूज्यप्रवर ने मर्यादाओं का वाचन कर प्रेरणाएँ प्रदान करवाई। मुनि दिनेश कुमार जी एवं मुनि कुमार श्रमण को लेख-पत्र उच्चारण करने का निर्देश दिया। हमारी संवर-निर्जरा की साधना अच्छी चलती रहे।

सात वर्ष पूर्व आज के दिन मैंने मुनि महावीर कुमार को मुख्य मुनि पद पर नियुक्त किया था। उससे दो दिन पूर्व साध्वी सम्बुद्धयशा को साध्वीवर्या पद पर नियुक्त किया था। साध्वीप्रमुखाश्री जी का भी चयन दिवस वैशाख शुक्ला चतुर्दशी है। तीनों के प्रति हमारी शुभाशंषा।

हमारा यहाँ धर्मपुर आना हुआ, राकेश भाई से मिलना हुआ। कल उनसे वार्ता भी हुई थी। यहाँ पर आध्यात्मिक-धार्मिक गतिविधियाँ व साधना अच्छी चलती रहे। हमें यहाँ वात्सल्य-स्नेह के साथ अच्छा स्थान मिला। यहाँ के प्रति हमारी मंगलकामना है कि यह संस्थान खूब धार्मिक-आध्यात्मिक विकास करता रहे। राकेश भाई जी भी खूब आध्यात्मिक नेतृत्व प्रदान करते रहें। देश-विदेश में अहिंसा का प्रसार होता रहे। कई-कई साधक गृहस्थों से भी प्रेरणाएँ ली जा सकती हैं। पूज्यप्रवर ने ध्यान का प्रयोग भी करवाया।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा कि गुरु ने शिष्य के प्रश्न को समाहित करते हुए कहा कि जो दिखाई दे रहा है, वह पुद्गल है, जो तुम देख रहे हो, वह आत्मा है। कभी-कभी लगता है कि हमारा जीवन ही पुद्गल सापेक्ष है। प्रारंभ में तो पुद्गल का सेवन अच्छा लगता है, पर अंत में उनमें नीरसता आ जाती है। पर अध्यात्म के क्षेत्र में प्रारंभ में तो नीरसता की अनुभूति होती है पर बाद में धीरे-धीरे उसमें सापेक्षता आने लगती है। जब व्यक्ति आत्म-दर्शन की स्थिति में चला जाता है, उसे आनंद आने लगता है। शरीर कृश हो सकता है, पर आत्मा का बगीचा हरा-भरा रहता है। पर दोष-दर्शन से आत्म-दर्शन नहीं हो सकता। हम सब आत्म-दर्शन करें। आचार्यप्रवर बाहर में जीकर भी भीतर जी रहे हैं। ध्यान भी एक इसका साधन बन सकता है।

व्यवस्था समिति की ओर से राकेश भाई का साहित्य द्वारा सम्मान किया गया। आत्मार्थी मौलिक भाई ने आभार ज्ञापित किया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

कर्म बंध से मुक्ति के लिए संवर की साधना करें : आचार्यश्री महाश्रमण

नाना पोंडा, वलसाड १६ मई, २०२३

महान परिव्राजक आचार्यश्री महाश्रमण जी ने कल शाम धर्मपुर से विहार कर दिया था। प्रातः लगभग १४ किलोमीटर का विहार कर युगप्रधान का नाना पोंडा के स्वामी नारायण विद्या संस्थान में प्रवास हेतु पदार्पण हुआ। यहाँ पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए परम पूज्य ने फरमाया कि हमारी सृष्टि क्या है? यह दुनिया क्या है? यह लोक-दुनिया छः द्रव्यों वाली है।

जैन दर्शन के अनुसार यह दुनिया छः द्रव्यात्मक है। इनमें ज्ञातव्य, परिहर्तव्य और कर्तव्य क्या है? दुनिया क्या चीज है? हम मानव जीवन जी रहे हैं, हम करें क्या? क्या ग्रहण करें, क्या छोड़ें, कैसे हमारी आत्मा का उत्थान हो? इस जिज्ञासा को समाहित करने के लिए नव तत्त्ववाद है। छः द्रव्य अस्तित्ववाद में हैं और नौ तत्त्व उपयोगितावाद के संदर्भ में हैं। अध्यात्म की साधना और आत्म कल्याण के नौ तत्त्वों का विशेष महत्त्व है।

जिसमें चैतन्य है, वह जीव है, जिसमें चैतन्य नहीं होता वह अजीव है। वैसे जीव-अजीव में सारे तत्त्व आ जाते हैं। दुनिया में जो कुछ है, वह जीव है या अजीव है। छः द्रव्यों में भी एक जीव पाँच अजीव हैं। बंध के कारण से अजीव शरीर का आत्मा रूपी जीव से जोड़ा हुआ है। कर्मों का बंध पुण्य या पाप रूप में हो सकता है। आश्रव के द्वारा कर्मों का बंध होता है। आश्रव संसार भव का हेतु है। कर्म बंध से मुक्ति के लिए संवर की साधना परिपुष्ट करें।

कर्म न बंधे उसका उपाय है—संवर। संवर मोक्ष का कारण है। १२३४५ की समस्या को विस्तार से समझाया कि किस तरह पाँच आश्रवों को रोकने से कितना लाभ होता है। पूर्व में बंधे कर्मों को तोड़ने का उपाय, आत्मा की आंशिक उज्ज्वलता निर्जरा है। आत्मा की संपूर्ण कर्म मुक्ति मोक्ष की अवस्था है। नौ तत्त्वों को तालाब के दृष्टांत से समझाया।

तत्त्व-बोध आत्म-कल्याण के संदर्भ में बड़ा महत्त्वपूर्ण है। अध्यात्म के सार के रूप में यह नव तत्त्ववाद है। नव तत्त्व को समझकर उन पर श्रद्धा कर लेना सम्यक्त्व है। हमारा ज्ञान सम्यक् रहे, पुष्ट से पुष्टतर होता रहे, यह काम्य है।

आज स्वामी नारायण संस्थान में आए हैं, यहाँ भी खूब अध्यात्म की साधना होती रहे।

पूज्यप्रवर के स्वागत में स्वामी नारायण संस्थान के मैनेजिंग ट्रस्टी हरिवल्लभ दास जी एवं अनिल भाई ने पूज्यप्रवर की अभ्यर्थना की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

जीवन में अहिंसा धर्म का पालन करें : आचार्यश्री महाश्रमण

भूतसर, वलसाड, १६ मई, २०२३

परम यशस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी ने भूतसर में मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि ज्ञानी होने का ज्ञानी आदमी को लाभ मिलना चाहिए। उसका सार सामने आना चाहिए। ज्ञानी आदमी के ज्ञान का सार है कि वह किसी के प्रति हिंसा नहीं करता। अहिंसा धर्म से उसकी आत्मा प्रभावित हो जाती है।

अहिंसा के लिए समता की साधना आवश्यक है। आत्मा ही अहिंसा है, आत्मा ही हिंसा है। जो अप्रमत्त है, वह अहिंसक है। जो प्रमत्त है वह हिंसक हो सकता है।

(शेष पृष्ठ १५ पर)

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै. जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज, औद्योगिक क्षेत्र, दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 110 002 से प्रकाशित। कार्यकारी संपादक : **दिनेश मरोठी**